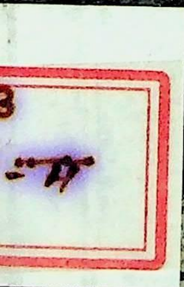
82,980





82986

महात्मा गोखले





सम्पादक

ओङ्कारनाथ वाजपेयी

जिज्ञासु



स्वर्गीय गोपाल कृष्ण गोखले ।

Onkar Press Allahabad.

॥ ओ३म् ॥

ओंकार आदर्श चरित-माला का तृतीय पुष्प।

महात्मा गोखले

(राजनैतिक संन्यासी और निष्काम कर्मयोगी)

"नरपति हितकर्ता द्वेष्यतां याति लोके।
जनपद हितकर्त्ता त्यज्यते पार्थिवेन॥
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने।
नृपति जनपदानां दुर्ल्लभः कार्य्यकर्त्ता॥"

लेखक

नन्दकुमार देव शर्म्मा

(भूतपूर्व सम्पादक--"विहारबन्धु" "आर्य्यमित्र", संयुक्त सम्पादक--सद्धर्मप्रचारक आदि)

सम्पादक तथा प्रकाशक

पं० ओङ्कारनाथ वाजपेयी

पं० ओङ्कारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस, प्रयाग में छपा।

ज्येष्ठ संवत् १९७२।

[तृतीय संस्करण]   [मूल्य ।)





निवेदन

लीजिये पाठक ! आपके कर कमलों में वृद्धा भारतमाता के उस सुपुत्र महात्मा गोखले की गुणावली सादर समर्पित है जिसके वियोग के कारण सारे देश में शोक छा रहा है। आशा है शोक सन्तप्त भारतवासियों को महात्मा गोखले का जीवन चरित शान्ति प्रदायक ही नहीं होगा किन्तु लोकमान्य तिलक के शब्दों में उनके जीवनचरित से अनेक बातोंका बोध भी प्राप्य होगा।

अन्त में निवेदन है कि इस लघु पुस्तिका में जो कुछ भूल चूक हुई हो उसको पाठक केवल क्षमा ही नहीं करें किन्तु बतलाने की भी कृपा करें जिससे तीसरे संस्करण में संशोधन कर दिया जायगा।

निवेदक

नन्दकुमार देव शर्म्मा

प्रयाग

भूमिका

संसार के महापुरुषों के जीवन चरितों को देखकर अथवा पढ़कर यह पता लगता है कि जितने महापुरुष संसार में हुये हैं उन्होंने या तो किसी महापुरुष के जीवन को स्वयं देखकर उसका अनुकरण किया है अथवा उसने अपने पूर्वजों की जीवन कथाओं को सुना है जिनको सुनकर उन्हें अपने जीवन का आदर्श बनाया है। प्रमाण के लिये महावीर नेपोलियन को ले लीजिये। बचपन ही से उसे वीर योधाओं के जीवन चरित्र पढ़ने में रुचि होगई थी। यूनान के योधा जगत्विजयी सिकन्दर तथा रोम के युद्ध कुशल सीज़र के जीवन चरित्रों में उसकी विशेष भक्ति थी। वर्त्तमान सेन्डो के जीवन चरित्र से पता लगता है कि होरेशश आदि यूनान के वीरों की पाषाण मूर्तियों को देखकर उसमें उन वीरों के जीवन चरित्र पढ़ने की इच्छा हुई और उन्हें पढ़कर उसे अपने को महाबली बनाने का उत्साह हुआ। इसलिये छोटे बालक या बालिकाओं में अथवा नवयुवकों तथा नवयुवतियों में महात्माओं के जीवन चरित्र पढ़ने की रुचि उत्पन्न करना चाहिये। इसी उद्देश्य को सामने रखकर यह जीवन चरित्र माला निकालना आरम्भ किया है। यदि सज्जन लोग इन जीवनियों को स्वयं पढ़कर अपने इष्ट मित्रों में प्रचार करने की चेष्टा करेंगे तो मुझे भी उत्साह होगा और लगभग संसार के ४०० महापुरुषों के जीवन चरित्र निकालने का प्रयत्न करूंगा।

भवदीय अनुग्रहीत

ओंकारनाथ बाजपेयी

महात्मा गोखले

५०५
२८-८-६३

राजनैतिक संन्यासी और निष्काम कर्मयोगी

प्रस्तावना

"मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका स्वदेश के लिये॥"

इस संसार में मरना जीना सब को है, कोई अमर होकर नहीं आया है। पर वे पुरुष धन्य हैं जो अपनी जननी और जन्म भूमि की सेवा करते हुये सद्गति को प्राप्त होते हैं। इस ससार में अगणित नरनारी नित्यप्रति जन्म लेते हैं और मरते हैं, पर उनका मरना, जीना बराबर है। किन्तु जिन्होंने अपने देश की सेवा की है, जिन्हों ने अपना दुःख सुख देश के दुःख सुख में समझा है, जो देश की परिस्थित के सामने अपना सुख दुःख कुछ नहीं समझते, वे ही पुरुष धन्य हैं। तब ही तो कवि कहता है कि उनका मरना भला है जो अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ चिन्ता नहीं रखते, वे जीते हुये भी मरे के समान हैं। उनका जीना मरना ही क्या है? परन्तु जो इस संसार में आकर अपना कर्तव्य

पूरा कर गये हैं जिन्होंने अपने कर्त्तव्य पालन करने में किसी विघ्न बाधा की परवाह नहीं की जिनके जीवन का मूल मन्त्र "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" रहा है। जिनकी दीन दुखियों की भलाई में, देश की सेवा में ही जीवन व्यतीत करते हुए मृत्यु हुई है वे मरे भी जीते हैं। उनके उपदेश, उनके कार्य और सब से बढ़कर उनका आदर्श जीवन उन्हें अमर बनाये रखता है। "अमर फल" "अमृत फल" आदि की बहुतसी कथाएं सुनने में आती हैं, पर सच पूछिये तो वह "अमर तत्व" देश सेवा में ही है। देश सेवाकरनेवालों को ही अमरत्व प्राप्त होता है। भारतमाता के ऐसे ही सपूतों में से महात्मा गोखले थे जिन्होंने "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का जाप करते हुए अमर फल प्राप्त किया है। इस शताब्दी में जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र निर्माण और नव्य भारत के चरित्र गठन करने का प्रबल प्रयत्न किया है उनमें से महात्मा गोखले का भी बहुत ऊंचा स्थान है। उन के जीवन का व्रत केवल देश सेवा के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहा था। लगातार तीस वर्ष तक उन्होंने देश सेवा की थी। तीस वर्ष तक उन्हें दिन और रात देश की चिन्ता रहती थी। सरकार और सर्वसाधारण दोनों के वे विश्वास भाजन रहे थे, राजा और प्रजा दोनों के वे आदरणीय मित्र थे। आशा है उनके आदर्श चरित्र से पाठक अनेक शिक्षाएँ ग्रहण करेंगे।

जन्मभूमि और वंश परिचय

जननी और जन्मभूमि का मनुष्य के जीवन से घनिष्ट सम्ब-

न्ध होता है इसमें तनिक भी सन्देह करने का स्थान नहीं है कि जिस प्रकार गर्भवती माता के गुण कर्म और स्वभाव का गर्भ में स्थित सन्तान पर प्रभाव पड़ता है वैसेही जन्म-भूमि की परिस्थिति बालक पर कुछ न कुछ अपना रङ्ग जमाये बिना नहीं रहती हैं। गोखले के जन्म का सौभाग्य उसी महाराष्ट्र प्रदेश को प्राप्त हुआ है जो मुसलमानों के समय में रणचण्डिका का प्रधान स्थल बना था। महाराष्ट्र भूमि सदैव सेवीरों और राजनीतिज्ञों की खान बनीरही हैं। शिवाजी जैसे महावीरको उत्पन्न करने का गौरव महाराष्ट्र प्रदेश को ही प्राप्त है। शिवाजी के गुरुसमर्थ स्वामी-रामदास तुकाराम, एक नाथ, श्रीब्रह्मेन्द्र आदि साधु सन्तों की जन्मभूमि और क्रीड़ास्थल होने का गौरव महाराष्ट्र प्रदेश को ही है। नानाफड़नवीस जैसे राजनीतिज्ञ इसी महाराष्ट्र भूमि में पले थे। कहने का सारांश यह कि विद्या, बुद्धि और बल का सदैव से महाराष्ट्र प्रान्त घर रहा है। आज भी एक बङ्गाल को छोड़कर भारत-वर्ष का ऐसा कोई प्रान्त नहीं है जो महाराष्ट्र प्रान्त की समता कर सके। रानाडे, चिपलूणकर, तैलङ्ग, तिलक, मान्डलिक, आपटे, भण्डारकर, गोखले, पराञ्जपे आदि नर रत्नों के जोड़ का एक बङ्गाल को छोड़कर दूसरे प्रान्त में कोई दिखलाई नहीं पड़ता है। भारतवर्ष में विशेषतया महाराष्ट्र प्रान्त में राष्ट्रीय और सामाजिक विषयों में केवल ब्राह्मण ही अगुआ होते आये हैं और इस समय भी हैं, उनमें भी कोकणस्थ और चितपावन ब्राह्मण, विशेषतः कोलावा और रत्नागिरि ज़िले के बड़े बड़े नामी होते आये हैं। जिस कोकणस्थ जाति में उत्पन्न होने का सौभाग्य रानाडे, तिलक, नानाफड़नवीस

आदि को प्राप्त है उसी कोंकणस्थ ब्राह्मण जाति के एक निर्धन ब्राह्मण के यहां कोल्हापुर ज़िले के कंगाल गांव में सन् १८६६ में एक बालक का जन्म हुआ। उस समय किसी को क्या ख़बर थी कि एक दिन यह बालक भारतवर्ष का एक रत्न होकर "महात्मा गोखले" के नाम से विख्यात होगा। एक दिन इस बालक को लोग अपना सिरताज समझेंगे, जो दीन दुःखियों का वृद्धा, भारतमाता का दुःख दूर करने का बीड़ा उठावेगा। जो सारे देश को ही अपना कुटुम्ब समझेगा।

बाल्यकाल और शिक्षा

धन की अपेक्षा चरित का विशेष महत्व है। मनुष्य का भूषण शील ही है, जिसका चरित उत्तम है, उसके आगे धन, दौलत सब तुच्छ है। वे लोग जो सोने चांदी की जगमगाहट में अपने पापों को छिपाये रहते हैं कदापि उन लोगों की समता नहीं कर सकते हैं जो अपने शील, स्वभाव और आचरण को बिगड़ने नहीं देते हैं। यद्यपि गोखले के माता पिता दरिद्र थे, उनके पास धन नहीं था तथापि वे उच्च चरित्र के और अच्छे कुल के थे। उनके चरित्र के महत्व का केवल इसी से परिचय मिलता है कि उन्होंने निर्धन होने पर भी मिस्टर गोखले की शिक्षा में किसी प्रकार की कमी नहीं की थी।

गोखले की बाल्यावस्था की बहुतसी विचित्र बातें हैं, जिनको यहां लिखने का स्थान नहीं है। परन्तु इस में सन्देह नहीं "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस लोकोक्ति के अनुसार सब को बालक* गोपालराव-होनहार प्रतीत

*दक्षिण प्रान्त में यह चाल है कि अपने नाम के साथ, पिता का

होते थे। बालक गोपालराव सुशील होने के साथ ही साथ लज्जाशील और सङ्कुचित स्वभाव के भी थे। अपने अध्यापकों को किसी विषय में धोखा देना अथवा मिथ्या बोलना उन्हें कभी पसन्द नहीं था। कहते हैं जिन दिनों मिस्टर गोखले स्कूल में पढ़ते थे, उस समय एक बार एक अध्यापक ने अपने समस्त विद्यार्थियों को घर पर गणित का एक प्रश्न हलकरने को दिया। गोखले ने घर पर किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता से गणित का प्रश्न हल करलिया, और जब दूसरे दिन अध्यापक ने दरजे में देखा कि सिवाय गोखले के कोई विद्यार्थी उस प्रश्न को करके नहीं लाया है, तब उसने गोखले से दरजे में प्रथम स्थान पर बैठने को कहा। अपने अध्यापक की यह आज्ञा सुनकर बालक गोखले फूट फूट कर रोने लगे, उनको रोते देखकर अध्यापक तथा सब विद्यार्थियों को आचरज हुआ। अध्यापक ने बड़े प्रेम से उनको शान्त करके रोने का कारण पूछा, तब उन्होंने सच्चा हाल कहदिया कि "यह प्रश्न मैंने दूसरे की सहायता से किया है, स्वयं नहीं किया है। प्रथम स्थान पर बैठने का मुझे कोई अधिकार नहीं है"। इतना कह कर मिस्टर गोखले चुप ही नहीं रहे किन्तु उन्होंने दूसरे से पूछकर प्रश्न हल करने के लिये अपने को यह दण्ड भी दिया कि सप्ताह के बाकी दिनों में वे क्लास में सब से अन्तिम स्थान पर ही बैठे। क्या विद्यार्थी गोपालराव के चरित्र की यह घटना, हमारे यहां के आज कल के छात्रों को अनुकरणीय

भी नाम लिखा करते हैं। मिस्टर गोखले के जन्म का नाम गोपालराव था। बड़े होने पर आधा उनका नाम गोपाल और आधा पिता का नाम कृष्ण मिलकर, गोपालकृष्ण हुआ।

नहीं है ? वर्त्तमान समय में परिश्रम से जी चुरानेवाले केवल विद्यार्थी ही नहीं, किन्तु वे लेखक, ग्रन्थकार और पत्र सम्पादक भी अपनी बुद्धि को कष्ट न देकर, जो इधर उधर चुरा चुरा कर दूसरे के सिर पर त्यौहार मनाया करते हैं, इस से बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

छात्रावस्था में ही गोखले अपनी तीव्र स्मरण शक्ति, अपूर्व परिश्रम और सावधानी के लिये विख्यात होगये थे। उस समय ही लोगों को विश्वास हो गया था कि जिस किसी कार्य का यह बीड़ा उठावेंगे उसको सीमा तक पहुंचाये बिना नहीं रहेंगे जैसे ये छात्रावस्था में कुशाग्रबुद्धि थे, वैसे ही इनकी शिक्षा में कमी नहीं हुई। सुनते हैं, जब गोखले बहुत छोटे थे तब ही उन्हें अपने पितृ वियोग का दुःख सहन करना पड़ा था। किसी ने सच कहा है कि जो माता पिता अपने पुत्र को शिक्षा नहीं देते हैं, वे उसके शत्रु हैं। गोखले के माता पिता ने निर्धन होने पर भी गोखले को शिक्षा से बंचित रख कर शत्रुता नहीं की। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना यथेष्ठ कर्त्तव्य पालन किया। गोखले के पिता की मृत्यु हो जाने पर उनकी शिक्षा में कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई। पिता की मृत्यु होजाने पर सारे परिवार का भार उनके बड़े भ्राता पर आ गया था। परन्तु इस से उनकी शिक्षा में रुकावट नहीं हुई बड़े भ्राता ने भी अपने कनिष्ठ सहोदर की शिक्षा में यथाशक्ति कसर नहीं रक्खी। हत भाग्य भारतवर्ष में बहुत से होनहार विद्यार्थियों की शिक्षा में कमी दरिद्रता के कारण हो जाती है, पर भारत माता के सौभाग्य से गोखले के नसीब में यह बात नहीं हुई। उन्होंने कोल्हापुर के राजाराम कालेज

से इन्टरमीजिएट अर्थात् एफ० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होजाने पर वे बम्बई के एलफिन्स्टिन कालेज में और कुछ दिनों तक पूना के "डककन कालेज" में बी० ए० की परीक्षा के निमित्त पढ़ते रहे।

१८ वर्ष की अवस्था में, बम्बई की यूनिवर्सिटी से बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उस समय आज कल की भांति सोलह वर्ष से कम की यूनिवर्सिटी में मैट्रिक (एन्ट्रेन्स) परीक्षा की पख न थी, यदि यह पख होती तो गोखले महोदय कदापि अठारह वर्ष की अवस्था में बी० ए० पास न होने पाते। आज कल एन्ट्रेन्स की परीक्षा में सोलह वर्ष की सीमा होजाने से न मालूम गोखले महोदय के समान और प्रतिभाशाली कितने ही छात्रों को निराश होकर अपना समय नष्ट करना पड़ता है।

स्वभाव में परिवर्त्तन

कालेज में पढ़ते समय गोखले महोदय ने केवल विद्या सम्बन्धी ही उन्नति नहीं की किन्तु उनके जीवन और स्वभाव में बहुत कुछ परिवर्त्तन हुआ। गोखले के माता पिता पुराने ढङ्ग के कट्टर ब्राह्मण थे। वे भोजन के छूत छात आदि के माननेवाले थे। कालेज में पहुंचने से पहले गोखले महोदय भी भोजन सम्बन्धी छूतछात आदि के विचारों में पले थे। पहले ही दिन जब वे कालेज के बोर्डिङ्गहाउस (छात्राश्रम) में पहुंचे तब उन्हें अपने साथियों को पीताम्बरादि कोई रेशमी वस्त्र भोजन के समय पहनते हुए न देख कर और

मामूली कपड़े कमीज़ धोती वग़ैरः पहन कर भोजन करते हुए बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सङ्गी साथियों से अलग चौका में पीताम्बर अथवा रेशमी धोती पहन कर भोजन करने लगे परन्तु उनका यह नियम चल नहीं सका। हमारे पाठकों में से जो स्वयं विद्यार्थी अवस्था में रहे हो अथवा जिन्हें स्कूल के विशेषतः कालेज के छात्राश्रमों के विद्यार्थियों की रहन सहन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो उन्हें इसका अच्छी तरह से अनुमान होगया होगा कि मिस्टर गोखले अपने भोजन सम्बन्धी पुराने नियम का पालन करने में क्यों नहीं समर्थ हो सके। प्रायः विद्यार्थियों का एक दूसरे को छेड़ छाड़ करने का चंचल स्वभाव हुआ करता है। गोखले महोदय चंचल स्वभाव के नहीं किन्तु शान्ति प्रिय थे, परन्तु उनके साथी जब कभी वे भोजन करने बैठते थे तब उनसे छेड़ छाड़ किये बिना नहीं रहते थे। गोखले के साथी सिर्फ़ मुंह सेही गोखले से छेड़ छाड़ की बातें करके चुप नहीं होजाते थे किन्तु उनका चौका छू लेते थे, भोजन करते समय वस्त्र छू लेते थे। गोखले महोदय के साथी जान बूझ कर उनको चिड़ाने के लिये उन्हें स्वयं छू लेते थे। पहले ही पहल हमारे चरितनायक अपने सङ्गी साथियों के इस व्यवहार से दुःखित हुए और कुछ क्रोधित भी हुए। किन्तु क्रोधित होने पर भी उन्होंने अपने साथियों के प्रति शान्ति और उदारता का परिचय दिया। वे अपने साथियों के इस व्यवहार से चुपचाप शान्ति पूर्वक बैठ गये। उन्होंने अपने साथियों के व्यवहार की छात्राश्रम के व्यवस्थापक (सुपरिन्टेन्डेन्ट) प्रभृति से कुछ शिकायत नहीं की। और धीरे धीरे उन्होंने अपने साथियों के समान

ही भोजन करना आरम्भ कर दिया। यदि वे पुराने और कट्टर विचारों में ही पड़े रहते तो भविष्य में उन्हें बड़ी बड़ी कठिनताओं का सामना करना पड़ता। वे विलायतवासियों को इस देश की दुर्दशा सुनाने के लिये न जाने पाते। कहते हैं इन दिनों जब कभी सामाजिक सुधार आदि की चर्चा चला करती तब गोखले महोदय कहा करते थेः—"मैं अपने कालेज के मित्रों का विशेष कृतज्ञ और अनुग्रहीत हूं जिन्हों ने मुझसे यह कट्टरपन छुड़ाया था"

खेलों का अनुराग

प्रायः यह बात देखने में आती है कि जो मनुष्य क्रियाशील होते हैं, उनकी क्रयाशीलता खेल कूद में भी अपना विचित्र रूप धारण कर लेती है। चाहे जिस महापुरुष के चरित्र की आलोचना कीजिये तो बचपन में खेल कूद में उसकी क्रियाशीलता का अनूठा ही पता लगेगा। महावीर नेपोलियन की बाल्यावस्था की खेल कूद की बहुत सी अद्भुत कथाएं हैं। और कितने ही महापुरुषों के जीवन चरितों में बालापन की विचित्र कथायें सुनने में आती हैं। मिस्टर गोखले के सम्बन्ध में भी "न्यू इन्डियन" " नामक समाचार पत्र में लिखा है कि छात्रावस्था में मिस्टर गोखले को खेल कूद में बड़ा अनुराग था। जब कभी वे ताश खेलते थे, उस समय उनका साथी खिलाडी ठीक तौर से न खेलता तो वे नाराज़ होजाते थे। जब कोई उनका मित्र उनके समान ताश खेलता तब उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहता था, उस समय वे प्रसन्न-

चित्त प्रतीत होते थे और कहने लग जाते थे कि "ये लोग मुझे जान बूझ कर छेड़ते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि मैं इनकी उटपटांग बातों से चिड़ जाता हूं" वस्तुतः इस सरल स्वभाव के कारण ही मिस्टर गोखले पर अगणित व्यक्तिओं की भक्ति और श्रद्धा हुई है। इस सरल स्वभाव और निष्कपट व्यवहार के कारण ही हजारों आदमी उनके अनुयायी हुए हैं। इस प्रकार की मिस्टर गोखले के चरित्र की बहुतसी घटनाएँ हैं जिनके यहां लिखने का स्थान नहीं है। किन्तु उनके जीवन की घटनाओं से प्रतीत होता है कि वे आरम्भ से ही सीधे सच्चे स्वभाव के थे उन्हें दिखावट और सजावट बिलकुल पसन्द नहीं थी।

अध्यापन-कार्य

जिस समय मिस्टर गोखले बम्बई युनीवर्सिटी से ग्रेज्युएट अर्थात् बी० ए० पास होचुके थे, उससे पहले ही से महाराष्ट्र प्रान्त में नवीन उत्साह, नवीन ज्योति स्फुरित होरही थी। महामति रानाडे और चिपलूणकर जैसे देश भक्त और उद्भट विद्वानों के प्रबल प्रयत्न से महाराष्ट्र प्रान्त में नवीन युग उपस्थित होगया था। जिस स्वदेशी आन्दोलन का ज्वार भाटा बङ्गविच्छेद के कारण सन् १९०५ में समस्त भारतवर्ष में उठा था। उसी स्वदेशी आन्दोलन की धूम धाम महाराष्ट्रप्रान्त में पहले ही से होरही थी, इस आन्दोलन के कारण ही सन् १८७० में महाराष्ट्र प्रान्त की पेशवाओं की राजधानी पूना में स्वर्गीय पं० गणेश वासुदेव जोशी की अक्लान्त चेष्टा से सार्वजनिक सभा की नींव पड़चुकी थी। चिपलूणकर, नामजोशी, आपटे, आगारकर और तिलक महोदय के उद्योग से पूना में

न्यू इङ्गलिश स्कूल की स्थापना होचुकी थी जो पीछे फर-ग्यूसन कालेज में परिणत होगया। इस देश भक्ति के भाव ने मिस्टर गोखले पर भी अपना रङ्ग जमाया। गोखले के बड़े भाई को यह आशा थी कि वे (गोखले) पढ़कर बहुत सा धन कमावेंगे, जिससे दरिद्रता दूर होगी। परन्तु उनकी आशा निराशा में परिणत हुई। गोखले महोदय ने अपने परिवार की दरिद्रता दूर न करके अपनी भारत माता की दरिद्रता के दूर करने की ठानी।

कहते हैं गोखले पहले एञ्जीनियरिङ्ग पढ़ना चाहते थे। किन्तु परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। भग-वान की कृपा से गोखले एञ्जीनियरिङ्ग पढ़ नहीं सके हमारे देश में एञ्जीनियर, वकील डाक्टर आदि की कमी नहीं है। परमात्मा को यह स्वीकार न था कि गोखले महोदय भी एक बड़े एञ्जीनियर होकर ही रह जायं। उसको तो उनके हाथ से बड़े बड़े काम कराने थे। सुनते हैं जहां गोखले के बड़े भाई उनके देश सेवा के व्रत को देखकर निराश हुएथे वहां उनकी माता ने प्रसन्नता पूर्वक भारत माता की सेवा के लिये आज्ञा देदी थी।

बी० ए० पास होने के थोड़े दिन पीछे ही मिस्टर गोखले न्यू इङ्गलिश स्कूल में केवल ४०) चालीस रुपये मासिक पर अध्यापक का कार्य करने लगे। वे अङ्गरेज़ी साहित्यके अध्या-पक हुए। उनसे छात्र मण्डली सदैव प्रसन्न रहती थी। उन दिनों मिस्टर गोखले को अङ्गरेज़ी साहित्य से विशेष अनुराग था। यह पहले कहा जा चुका है कि मिस्टर गोखले की स्म-रण शक्ति बड़ी तीव्र थी। वे जिस किसी विषय को दोबार

पढ़ लेते थे, उसको कभी भूलते नहीं थे, उनकी स्मरण शक्ति ने उनको अङ्गरेज़ी की योग्यता बढ़ाने में और भी सहायता दी। उन्हें —"टाइम्स आफ़ इण्डिया" जैसे पत्रों के कठिन लेख पढ़ते ही कण्ठ हो जाते थे। बेकन, मिल्टन, शेक्सपियर आदि अङ्गरेज़ी की कविताएँ तथा अन्य गद्य लेखकों के लेख उन्हें दो एकबार ध्यान पूर्वक पढ़ने से ही कण्ठ होजाते थे। रात दिन अङ्गरेज़ी साहित्य के अच्छे अच्छे ग्रन्थ अध्ययन करते थे, जिससे थोड़े दिनों में ही उनका अङ्गरेज़ी भाषा पर अधिकार पूरा होगया था और अपने छात्रों को भी बड़े प्रेम से पढ़ाते थे। इस भांति मिस्टर गोखले अध्यापक का कार्य करते हुए भी स्वयं अध्ययन करते थे।

फ़रग्यूसन कालेज से सम्बन्ध

जिस युवावस्था में मनुष्य के हृदय में अनेक प्रकार की इच्छाओं और लालसाओं की तरङ्गें उठा करती हैं, वहां महात्मा गोखले की महत्वाकांक्षाएँ देश सेवामें परिणत होगईं जहां हतभाग्य इस देश के नवयुवकों को युवावस्था में केवल भोग विलास के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं है वहां माहात्मा गोखले ने संसार के सब सुखों पर लात मारकर अपनी समस्त उच्चाकांक्षाओं को भारतमाता के चरणों में सादर समर्पित कर दिया। उन्होंने सच्चे मन से अनुभव किया कि देश के नवयुवकों के हृदय में पवित्र विचारों का सञ्चार किये बिना देश की स्थिति सुधर नहीं सकती है। और यह कार्य अच्छे अध्यापकों द्वारा ही होसकता है। नवयुवकों के आचा

विचार ढालने और स्वभाव परिवर्त्तन करने में एक सुयोग्य अध्यापक विशेष कार्य्य कर सकता है। बस इस विचारवश उन्होंने "न्यू इङ्गलिश स्कूल "के फरग्यूसन कालेज में परिणतहो जाने से उक्त कालेज की अध्यापकता स्वीकार करली। और वे पीछे* "डेक्कन एज्यूकेशन सोसाईटी" दक्खन-शिक्षा समिति के Life member (जीवन भर के लिये सभासद) हो गये। उन दिनों फ़रग्यूसन कालेज में अङ्गरेज़ी के एक अच्छे प्रोफ़ेसर की आवश्यकता थी। मिस्टर गोखलेने इस कार्य का भार अपने ऊपर लिया। सुना जाता है, जब वे अपने विद्यार्थियों को अंगरेज़ी साहित्य सम्बन्धी टिप्पणियां (नोट्स) लिखाते थे, तब वे बड़ी जल्दी जल्दी गम्भीर विषयों पर नाट्स बोलते जाते थे। विद्यार्थियों को नोट्स लिखने में बहुत शीघ्रता करनी पड़ती थी। उनका अंग्रेज़ी में शब्द लालित्य और वाक्य विन्यास सुन्दर होता था। अगरेज़ी के नित्य नये मुहावरे

---

* दक्खिन शिक्षा समिति के सभासदों को पूना के फ़रग्यूसन कालेज और समिति के अन्तर्गत स्कूलों में ७५) पछत्तर रुपये मासिक पर बीस वर्ष तक शिक्षक का कार्य करना पड़ता है। उस समय सोसाईटी उनका जीवन बीमा (लाईफ़इन्स्योरेन्स) तीन हजार का करा देती है। सोसाइटी उनके जीवन की बीमा कराई मासिक ख़र्च भी देती है बीस वर्ष पीछे उनको तीस रुपया मासिक पेन्शन मिलती है। सोसाईटी के अहाते में प्रोफ़ेसर अपने रहने के लिये मकान बना सकते हैं। सोसाईटी की इमारत लग भग चार लाख रुपये की बनी हुई है। कालेज को सरकार से पचास हजार रुपये की विशेष सहायता के अतिरिक्त दस हजार रुपया वार्षिक सहायता भी मिलती है बम्बई प्रान्त, विशेषतः दक्षिण प्रान्त के लोग भी इसकी सहायता करते हैं। कुछ दिन हुये स्वर्गीय राव साहब बी० एन० माण्डलिक ने लगभग पचास, साठ हजार रुपये की पुस्तकें इस कालेज को दान दी थीं।

उनके मुख से निकलते थे। वे केवल अंग्रेज़ी ही नहीं, अर्थ-शास्त्र, इतिहासादि सभी विषय पढ़ाते थे।

मिस्टर गोखले ने जिस भांति अंगरेज़ीमें योग्यता बढ़ायी थी, उसी भाँति उन्होंने अर्थशास्त्र, इतिहासादि विषयों में भी अपनी योग्यता का विस्तार किया। केवल संस्कृत को छोड़कर वे कालेज में अर्थशास्त्र, इतिहासादि सभी विषयों पर व्याख्यान दिया करते थे। परन्तु उनका सबसे अधिक प्रिय विषय "गणित" था, न्यू इंगलिश स्कूल के अध्यापक रहते समय ही उन्होंने गणित में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी। उन दिनों उन्होंने एक "अङ्कगणित" लिखी थी। जो एक अंगरेज़ी पुस्तक विक्रेता ने प्रकाशित की थी। जिस से मिस्टर गोखले को अच्छी आमदनी हुई और शायद जिस से अब भी कुछ आमदनी होती है। बम्बई प्रान्त में मिस्टर गोखले की अङ्कगणित का बड़ा प्रचार हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि मिस्टर गोखले केवल अङ्गरेज़ी साहित्य के ही ज्ञाता नहीं थे, किन्तु और और विषयों के भी अच्छे मर्म्मज्ञ थे। इतिहास में वे ऐसे प्रवीण थे कि एम० ए० न होने पर भी एम० ए० के इतिहास की परीक्षा में परीक्षक हुये थे।

ऊपर लिखा जा चुका है, मिस्टर गोखले फरग्युसन कालेज में एक संस्कृत को छोड़कर अङ्गरेज़ी, गणित इतिहास अर्थशास्त्र आदि सभी विषय पढ़ाया करते थे परन्तु थोड़े ही दिन पीछे वे अर्थशास्त्र और इतिहास के प्रोफ़ेसर होगये। इन विषयों को वे कालेज के छोड़ने के समय तक बराबर पढ़ाते रहे। उनकी इतिहास की योग्यता के सम्बन्ध में ऊपर लिखा जा चुका है पर अर्थशास्त्र का भी उन्होंने इतना मनन किया

था कि इस विषय के वे अथारिटी (प्रमाण) समझे जाते थे। अर्थशास्त्र के वे कैसे विलक्षण विद्वान थे, उसका पता उनकी उन वक्तृताओं से लगता है, जो उन्होंने समय समय पर बड़े लाट साहब की कौंसिल में बजट के सम्बन्ध में दी थीं। मिस्टर गोखले के अर्थशास्त्र सम्बन्धी व्याख्यान विद्यार्थियों को इतने अच्छे प्रतीत होते थे कि जब वे कालेज से विदा हुये तब सब लोग यही कहते थे कि उनकी बिदाई से कालेजकी बहुत भारी क्षति हुई है।

विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार

अध्यापक रहते समय मिस्टर गोखले का अपने छात्रों के प्रति बड़ा अच्छा व्यवहार था। सुना जाता है जब वे "न्यू इङ्गलिश स्कूल" में पढ़ाते थे तब प्रत्येक विद्यार्थी की यही इच्छा होती थी कि वह मिस्टर गोखले की ही कक्षा में पढ़ने जावे। फरग्यूसन कालेज में जिन दिनों वे अध्यापक थे, उन दिनों भी प्रत्येक विद्यार्थी उन से कुछ पढ़ना अपने लिये बड़ा गौरव समझता था। मिस्टर गोखले का विद्यार्थियों को पढ़ाने और जटिल विषयों को समझाने का ढङ्ग बड़ा सुन्दर था। पर जब कभी किसी विद्यार्थी के कुछ बात समझ में न आती और कालेज में समय न रहने पर पूछता तो वे कह देते थे कि बार बार बतलाने, समझाने का समय नहीं है, परन्तु जब कभी कोई विद्यार्थी उनके घर पर पहुंचता तो वे उसको बड़े प्यार से जो कुछ वह पूछता था, बतलाते थे। अच्छी तरह से उसको समझा देते थे। इतने पर भी वे विद्यार्थियों से मिलते

जुलते समय अपने मान मर्यादाका पूरा ध्यान रखते थे। ऐसी कोई बात नहीं होनेदेते थे, जिस से कोई विद्यार्थी धृष्टता कर सके। विद्यार्थियों की उन पर विशेष भक्ति और श्रद्धा थी, प्रायः सभी विद्यार्थी उनका मान करते थे।

विद्यार्थियों के पढ़ाते समय मिस्टर गोखले इस बात का बड़ा ध्यान रखते थे कि उनके मुंह से कोई अयोग्य, अनुचित वाक्य न निकल जाय। कहते हैं जब कभी अंगरेज़ी साहित्य पढ़ाते समय किसी काव्य में शृंगाररस की कथा आ जाती थी तब वे अपने पाकेट में से रूमाल निकाल कर अपने मुंह में लगा लेते थे उनका चेहरा सुर्ख होजाता था। विशेषतः लड़कियों को शृङ्गाररस की कविता पढ़ाते समय उनको अत्यन्त लज्जा आती थी। जिस समय वे शृंगाररसकी कविता पढ़ाते थे, उस समय उनके विद्यार्थी उनके चेहरे की ओर देखने लग जाते थे और वे इसलिये नहीं कि मिस्टर गोखले उन्हें कविता का क्या भाव समझा रहे हैं बल्कि इसलिये कि कविता के समझाते समय उनकी क्या दशा है?

कालेज की सेवा

यद्यपि मिस्टर गोखले उक्त कालेज के संस्थापक नहीं थे, तथापि इस समय कालेज की जैसी अच्छी आर्थिक स्थिति है उसके लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया था। वे उस कालेज का कार्य केवल प्रोफ़ेसर होने के विचार से नहीं करते थे, किन्तु उन्हें उस संस्था से इतना प्यार था कि वे छुट्टियोंमें भी उसके लिये चन्दा जमाकरने जाते थे। बड़ा परिश्रम करते थे,

चन्दा उगाहने के लिये यात्रा करते थे। भारतवर्ष में जो लोग सार्वजनिक कार्यों के लिये चन्दा करते हैं वे ही जानते हैं कि ऐसे कार्यों के लिये चन्दा करते समय कितनी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। पर मिस्टर गोखले इसकी कभी चिन्ता नहीं करते थे। उन्होंने अपना कर्त्तव्य पालनही धर्म समझा था। कर्त्तव्य पालन करने में उन्हें जो यन्त्रणाएं होती थीं उन्हीं को सुख और आनन्द समझते थे। कालेज के मान अपमान का कुछ विचार नहीं करते थे। इस भांतिसे उन्होंने कालेजके लिये लगभग दो लाख रुपये एकत्रित कर लिये थे। उन्होंने कालेज की सेवा लगातार अठारह बीस वर्षतक अत्यन्त परिश्रमसेकी थी। यद्यपि कालेज के प्रिन्सपल न थे तथापि कालेज के लिये लगातार परिश्रम और उत्साह पूर्वक कार्य करने के कारण कालेज के कार्य सञ्चालन में वे प्रधान थे। वे कालेज के आधारस्तम्भ थे। कालेज उनको प्राणों से अधिक प्यारा था। कालेज की निस्वार्थभाव से सेवा करते थे। पूना में इस समय फ़रग्युसन कालेज का जो विशाल भवन बना हुआ है कहते हैं वह मिस्टर गोखले के प्रयत्न का ही फल है।

———

रानाडे का सत्संग

संसार में जितने पदार्थ दुर्लभ हैं उनमें किसी सज्जन का सत्संग होना अत्यन्त दुर्लभ है। चाहे गोखले महोदय का पूर्व सञ्चित कर्म कहिये, चाहे भारतवर्ष का सौभाग्य कहिये कि जिस समय मिस्टर गोखले फ़रग्युसन कालेज का कार्य करते थे, उस समय उनका न्याय मूर्ति, महात्मा

महादेव गोविन्द रानाडे से परिचय हुआ। जिस भांति स्वामी विरजानन्द को आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को देखकर अपने विचारों के प्रचार की आशा बंध गई थी। जिसभांति रामकृष्ण परमहंस को स्वामी विवेकानन्द से वेदान्तके प्रचार की बलवती आशा हुई थी, उसी भांति न्यायमूर्त्ति रानाडे महोदय को हमारे चरित्र नायक गोखले के देखते ही हृदय में बहुत सी आशाएं उत्पन्न होने लगीं। उनदिनों रानाडे महोदय पूना के नवयुवकों के परम प्रिय और आदर्श थे। यद्यपि वे सरकारी नौकरी में होने के कारण प्रत्यक्ष रूपसे राजनीति में भाग नहीं लेते थे तथापि वे देश सेवा के लिये नवयुवकोंको तैयार करनेमें नहीं चूकते थे। वे नवयुवकोंको राजनीति की भी शिक्षा दिया करते थे। रानाडे भारतमाता के उन सपूतों में से थे, जो चौबीसो घण्टे देश की भलाई ही की सोचा करते हैं। अतएव ऐसे महापुरुष की सङ्गति में रहकर यह कब सम्भव था कि महात्मा गोखले देश सेवा के व्रत से टलते। अनेक व्यक्तियों का ऐसा विचार है कि जिस भांति ज़ान (अब लार्ड) मोरले ने स्वर्गीय मिस्टर ग्लेडस्टोन की अपूर्व सङ्गति से लाभ उठाया था, उसी भांति मिस्टर गोखले के जीवन में * महामति रानाडे महोदय के सत्सङ्ग से बहुत कुछ परिवर्तन हुआ। न्यायमूर्ति

*स्वर्गीय रानाडे—बम्बई हाईकोर्ट के जज थे, उनका जन्म १८ वीं जनवरी सन् १८४२ को हुआ था और मृत्यु १६ वीं जनवरी सन् १६०१ को हुई थी। महाराष्ट्र प्रान्त में जो कुछ जागृति इस समय होरही है, उसमें का बहुत कुछ यश रानाडे महोदय कोही प्राप्तहै। सरकारी कर्मचारी होते हुयेभी राजनीति में भाग लेते थे। कांग्रेस के साथ प्रति वर्ष जो इण्डियन सोशल कान्फ्रन्स

रानाडे और महात्मा गोखले दोनों ने देश सम्बन्धी अनेक विषयों पर पारस्परिक मनन किया। रानाडे को जैसा योग्य शिष्य मिला वैसे ही गोखले महोदय को सद्गुरु मिले। गुरु और शिष्य दोनों का समय देश की परस्थिति के देखने भालने और विचारने में व्यतीत होने लगा। रानाडे महोदयके साथ साथ मिस्टर गोखले ने चौदह वर्ष तक अर्थशास्त्र का अध्ययन किया था। इस बात को गोखले महोदय स्वयं स्वीकार किया करते थे। वे निजू बातचीत तथा सर्व साधारण में रानाडे महोदय का नाम बड़े आदर से लिया करते थे और उनको अपना गुरु कहा करते थे। गोखले महोदय की न्यायमूर्ति रानाडे में बड़ी श्रद्धा और भक्ति थी. जिसके विषय में हम आगे लिखेंगे। परन्तु यहां पर गोखले महोदय के वे शब्द लिखे बिना नहीं रहा जाता है जो उन्होंने अपने गुरु के सम्बन्ध में कहे थेः—'मेरे गुरु की मृत्यु के पश्चात् मुझे दुनियां कुछ दूसरी ही दिखलाई पडती है। कारण यह है कि जिस देवता ने एक बार दर्शन दिया था सदैव मन में उसके दर्शन की लालसा रही आती है।" रानाडे महोदय के

होती है वह रानाडे के उद्योग का ही फल है। रानाडे इतिहास, अर्थशास्त्रादि विषयों के बड़े भारी विद्वान् थे। सन् १८७६ में बम्बई प्रान्त में पूना के बासुदेव बलवन्त नामक डकैत ने उत्पात मचाया था तब सर रिचर्ड टेम्पल की सरकार को रानाडे की ओर से सन्देह हुआ कि उन का भी वासुदेव बलवन्त से कुछ सम्बन्ध है या नहीं और उनकी पूना से धूलिया को बदली करदी। रानाडे को पूना शीघ्र छोड़ने की आज्ञा हुई। बम्बई सरकार कायह काम बम्बई हाईकोर्ट तक को खटका और उसने उसका प्रतिवाद किया परन्तु पीछे बम्बई सरकारको अपनी भूल ज्ञात हुई और रानाडे महोदय मिथ्या कलङ्क से मुक्त हुए।

कोई पुत्र नहीं था, परन्तु लोग कहा करते थे कि रानाडे इस संसार में नहीं हैं, पर वे गोखले को छोड़ गये हैं। गोखले ही उनके उत्तराधिकारी हैं।

सार्वजनिकसभा से सम्बन्ध

जिन दिनों मिस्टर गोखले पूना के फ़रग्युसन कालेज के प्रोफ़ेसर थे, उन दिनों पूना की सार्वजनिक-सभा का दूर दूर तक बड़ा नाम था। उस समय सार्वजनिक-सभा में राजा और प्रजा सम्बन्धी कितने ही गहन विषयों पर विचार हुआ करता था। उन दिनों सार्वजनिक सभा का सरकार और भारत वासियों का दृष्टि में बड़ा आदर था। उसकी जो त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित हुआ करती थी उसमें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मिस्टर रानाडे के दो तिहाई लेख और विचार हुआ करते थे। वे भारतीय कोष और भारतीय शासन सम्बन्धी लेख लिखा करते थे। ऐसे लेखों से वे लोक-मत की जागृति करते थे, साथ ही उन्हें यह भी पता लग जाता था कि लोकमत किधर झुका हुआ है। सन् १८८७ में मिस्टर गोखले २१ वर्ष की अवस्था में ही इस सभा की त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक और सार्वजनिक सभा के मन्त्री हुए। परन्तु इस बीच में मिस्टर तिलक और रानाडे के दलों में मतभेद होगया। इसलिये रानाडे को सार्वजनिक-सभा से अपना सम्बन्ध परित्याग करके अलग एक सभा—"डकेन-सभा" नाम्नी अलग स्थापित करनी पड़ी। मिस्टर गोखले इस सभा के भी मन्त्री हुए। इसके अतिरिक्त वे एगलों

मराठी "सुधारक" समाचार पत्र के सम्पादक भी चार वर्ष तक रहे थे। गोखले महोदय का अदम्य उत्साह अक्लान्त चेष्टा अपरमिति ज्ञान और गूढ़ विचारों को देखकर लोग उनको दक्षिण का उगता हुआ तारा कहने लग गये थे।

सार्वजनिक-सभा तथा डेक्कन सभा में रहते समय मिस्टर गोखले को अपनी योग्यताओं के विस्तार का विशेष साधन प्राप्त हुआ। गवर्नमेंट को, प्रान्तिक गवर्नमेंट को, जो कुछ आवेदन पत्रादि भेजने होते थे मिस्टर गोखले ही उन आवेदन पत्रादि को तैयार करते थे। मिस्टर गोखले कितने परिश्रमी थे और उनको अपने कार्य में कैसा धैर्य्य था इसका परिचय इस से ही लगता है कि अनेकबार महात्मा रानाडे—गोखले महोदय के आवेदन पत्रादि फाड़ डालते थे और कहते थे कि यह ठीक नहीं है। कितनी बार मिस्टर रानाडे के लिखे हुए लेख और प्रार्थना पत्रादि को तीन तीन चार चार बार फाड़ डालते थे और गोखले महोदय इसपर रुष्ट और विरक्त न होकर पुनः पुनः लेख और आवेदन पत्र तय्यार करके रानाडे महोदय को दिखलाते थे। और जब रानाडे उनके लिखे हुए कागज़ पत्रों को ठीक नहीं बतलाते थे तब तक वे विश्राम नहीं लेते थे। इस निरन्तर उद्योग का ही फल था कि पीछे मिस्टर गोखले सर्वमान्य नेता हुए। इसके लिये गोखले महोदय जन्म पर्य्यन्त अपने गुरु रानाडे महोदय का स्मरण भक्ति और श्रद्धा पूर्वक करते रहते थे।

कान्फरेंस और कांग्रेस से सम्बन्ध

जब इस भांति मिस्टर गोखले राजनैतिक कार्य्यों में

दत्तता प्राप्त कर रहे थे तब वे बाईस वर्ष की अवस्था में बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस में सम्मिलित हुए। इस कान्फरेंस में उनकी पहली पहिल जो वक्तृता हुई थी उसी से लोगों को विश्वास होगया था कि 'एक दिन परमात्मा इनके हाथ से बड़े बड़े काम करावेगा"। बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस की वक्तृता सुनकर ही गोखले महोदय के प्रिय मित्र मिस्टर मधोलकर ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि "एक दिन ये इण्डियन नेशनल कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट होंगे" जो पीछे यह बात सत्य निकली। इसके पश्चात् २५ वर्ष की अवस्था में वे बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस के मन्त्री होगये थे।

लगातार तीस वर्ष से कांग्रेस की कार्य्य प्रणाली को देखते हुए आज बहुत से लोगों को विरक्ति होगई है। परन्तु आज से बीस वर्ष पहले कांग्रेस की प्रारम्भिक अवस्था में कांग्रेस की धूम मची हुई थी। सर्वसाधारण कांग्रेस में अत्यन्त उत्साह पूर्वक सम्मिलित होते थे। सन् १८८५ से सन् १८९४ तक कांग्रेस के अनेक स्थानों में अधिवेशन होते हुए, सन् १८९५ में कांग्रेस की बारी पूना में आई। सन् १८९५ की कांग्रेस इस विशेष कारण से भी विख्यात है कि उस वर्ष महात्मा तिलक के प्रबल विरोध करने पर कांग्रेस के पिण्डाल में सोशल कान्फरेंस का अधिवेशन नहीं होने पाया था। उस वर्ष कांग्रेस का जो अधिवेशन पूना में हुआ था उसके सेक्रेटरी मिस्टर गोखले हुए। उस समय गोखले महोदय केवल २८ वर्ष के थे। परन्तु उस समय उन्होंने इतने परिश्रम से कार्य्य किया कि कांग्रेस के पुराने पुराने कार्य्यकर्त्ता भी उन की कार्य्य प्रणाली की मुक्त कण्ठसे प्रशंसा करते थे।

बेलवी कमीशन में साक्षी

सन् १८९७ में भारतवर्ष के वृद्ध और पूज्य श्रीयुत दादा भाई नौरोजी के प्रयत्न से विलायत में बेलवी कमीशन बैठा। इस कमीशन का उद्देश्य भारत सरकार के ख़र्च की जांच और उस में उचित फेर फार करना था। इस कमीशन के प्रमुख लार्ड बेलवी थे। इसी से इस कमीशन का नाम बेलवी कमीशन पड़ा। इसी कमीशन में भारत वर्ष के मुख्य मुख्य व्यक्तिओं को साक्षी देने के लिये निमन्त्रण आया था। बम्बई प्रान्त से स्वर्गीय जस्टिस रानाड़े महोदय इस कमीशन में साक्षी देने के लिये जानेवाले थे। पर इस देशका यह दुर्भाग्य है कि यहां सरकारी कर्मचारी किसी विषय में सरकार के विरुद्ध अपना मत खुल्लमखुल्ला प्रकट नहीं कर सकते हैं। उस समय लार्ड एलगिन भारतवर्ष के बड़े लाट थे उनकी गवर्नमेन्ट ने यह उचित नहीं समझा कि रानाडे सरकार के कर्मचारी होते हुए भारत शासन का आलोचना करें। इस लिये उन्होंने अपने स्थान में मिस्टर गोखले को भेजा। कमीशन में साक्षी देने के लिये गोखले महोदय ने लगातार छः महीने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और मिस्टर रानाडे ने उनको साक्षी देने के लिये तैयार किया। मिस्टर गोखले के अतिरिक्त मिस्टर वाचा भी बम्बई से इस कमीशन में शाक्षी देने गये थे। मिस्टर वाचाभी अर्थशास्त्र के अच्छे पण्डित हैं और वे मिस्टर गोखले से बीस, बाइस वर्ष अवस्था में बड़े हैं। उस समय मिस्टर गोखले ३१ वर्ष के थे, परन्तु उन्होंने इस छोटी सी उम्र में ही वहां पर जैसी साक्षी दी थी, उस से उनकी

विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और प्रतिभा तो प्रकट होती ही है परन्तु साथ ही उनके अगाध अनुभव का भी परिचय मिलता है। वेलवी जैसे कमीशन में शाखी देना कोई साधारण काम नहीं है। क्योंकि साक्षी में कमीशन की ओर से मिस्टर गोखले से जो जिरह की गई थी उसका बिना किसी तरह से घबड़ा कर, यथायोग्य उत्तर देना किसी साधारण व्यक्ति का कार्य्य नहीं था। मिस्टर गोखले से इस कमीशन में कैसे प्रश्न किये गये थे इसका अनुमान केवल इसी से लगता है कि वह छपे हुए प्रश्नोत्तर लगभग ७० पृष्ठों में हैं। परन्तु उन सब प्रश्नों का अच्छी तरह से उत्तर दिया। भारतवर्ष में सरकार के बहुत खर्च बढ़ने से क्या हानि क्या लाभ हो रहा है इस विषय में उन्होंने अपने युक्ति युक्त पूर्ण विचार प्रकट किये थे, जिन: को सुनकर भारतवासियों ने ही नहीं बल्कि दूसरे लोगों ने भी उनकी सराहना की थी। यदि मिस्टर गोखले की वेलवी कमीशन की सारी जिरह का यहां अनुवाद किया जाय तो समस्त पुस्तक उसी में भर जाय। इसलिये उस साक्षी का हम इस छोटी सी पुस्तक में अनुवाद देने में असमर्थ हैं। उन्होंने अपनी साक्षी को तीन भागों में विभक्त किया था। पहले भाग में उन्होंने अनेक प्रबल युक्तिओं और उदाहरणों से बतलाया था कि संयुक्त राज्य (इङ्गलेण्ड) और उपनिवेशों में जो कुछ खर्च होता है वह कर (टैक्स) देनेवाली प्रजा के देख रेख में होता है। अर्थात् उसकी व्यवस्था प्रजा करती है। इसलिये वह धन (कर) देनेवाली प्रजा की भलाई के लिये ही ख़र्च होता है। परन्तु हिन्दुस्तान में टैक्स देनेवाली प्रजा का हाथ व्यय की व्यवस्था में कुछ नहीं है। सेना का विशेष व्यय

है और सिविल सर्विस में प्रायः यूरोपियन हैं उनको अधिक अधिक वेतन मिलता है। यह सब खर्च भारतवर्ष के कोष से होता है।

साक्षी में मिस्टर गोखले ने अपने बड़े निर्भीक विचार प्रकट किये थे. उन्होंने एक स्थल पर कहा था कि भारत सरकार का सिपाही विद्रोह के पश्चात् ढाई गुना खर्च बढ़ गया है। प्रसङ्गवश उन्होंने यह भी कहा था कि वास्तव में तीस वर्ष के भीतर इङ्गलेण्ड फ्रांस, इटली प्रभृति सभी में राष्ट्रीय व्यय बढ़ा है परन्तु भारतवर्ष में पिछले वर्षों में जो व्यय बढ़ा है वह दूसरे प्रकार का है। उन देशों में शिक्षा प्रचार के लिये, सुख शान्ति के लिये, स्वास्थ्यादि के लिये खर्च किया जाता है। परन्तु भारतवर्ष की परस्थिति ही जुदी है। यहां राजकार्य पर प्रजा का कुछ अधिकार नहीं है, व्यय में प्रजा का कुछ हाथ नहीं है।

मिस्टर गोखलेने इस कमीशन में एक चिट्ठा उपस्थित किया था जिसमें उन्होंने यह दिखलाया था कि प्रतिदिन भारत सरकार का व्यय किसभाँति बढ़ रहा है। इस चिट्ठे में उन्होंने दिखलाया था कि सन् १८५२—५३ में सरकार का वार्षिक व्यय २८ करोड़ था। पर बढ़ते बढ़ते सन् १८९६—९७ में ७३ करोड़ होगया है। उन्होंने इस चिट्ठे में यह भी दिखलाया था कि सरकार प्रजा की आबादी तथा शिक्षादि में जो खर्च करती है उससे कई गुना, सेना का व्यय, इमारत आदि बनाने का है। सिर्फ़ फ़ौजी खर्च २५ करोड़ है, समस्त* ७३ करोड़ ख़र्च है।

*पाठकों को यहां पर पढ़ते समय स्मरण रखना चाहिये कि सन् १८९७ ई० तक का यह हिसाब है।

इसके आगे मिस्टर गोखले ने भिन्न भिन्न देशों में जो सैनिक व्यय है, उसका लेखा दिखलाया था, उन्होंने इस साक्षी में सैनिक व्यय के घटाने पर विशेष बल दिया था साथ यह भी परामर्श दिया था कि यदि गोरी सेना की अपेक्षा देशी सेना रक्खा जाय तो कम खर्चा पड़ेगा।

इस भांति मिस्टर गोखले ने वेलवी कमीशन में न केवल सैनिक व्यय के सम्बन्ध में ही अपने विचार प्रकट किये थे, परन्तु अन्यान्य विषय हाम चार्ज (भारत से इंगलेण्ड को जो रक़म जाती है) आदि पर भी अति उपयोगी और गम्भीर विचार प्रकट किये थे। सच पूछिये तो मिस्टर गोखले की साक्षी मार्के की है, इतने दिन बीत जाने पर भी इस साक्षी में बहुत सी जानने, विचारने और समझने योग्य बातें हैं। ऐसे हिन्दी लेखक जो उपन्यासों के लिखते समय यहां तक अश्लीलता की भरमार कर देते हैं कि बहिन भाई का पारस्परिक प्रेम अश्लील शब्दों में पतिपत्नी का सा दर्शाते हैं, यदि वे अपनी तथा अपने पाठकोंकी रुचि अश्लील उपन्यासों की ओर से हटाकर ऐसे विषयों का अनुवाद करें तो देश का बहुत कुछ कल्याण हो, पर अभी हिन्दी का ऐसा भाग्य कहां जो इस तरह की पुस्तकें हिन्दी पाठकों के; हाथ में पहुंचें। गोखले महोदय ने वेलवी कमीशन में जो साक्षी दी थी, उसका तथा बड़े लाट की कौंसिल में उन्होंने समय समय पर जो वक्तृताएं दी थीं उनके हिन्दी अनुवाद की बड़ी आवश्यकता है, क्या कोई हिन्दी प्रेमी इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे?

पूना में प्लेग और गोखले

सन् १८९७ का वर्ष जहां वेलवी कमीशन में साक्षी देने के कारण मिस्टर गोखले के जीवन में स्मरणीय है, वहां पूना में प्लेग होने के कारण भी उक्त वर्ष भारतवर्ष के इतिहास तथा उनके जीवन में सदैव स्मरणीय रहेगा। उस वर्ष बम्बई प्रान्त में प्लेग का विशेष प्रकोप था, पूना में भी प्लेग ने भयङ्कर रूप धारण किया था। सरकार ने पूना में प्लेग के दमन करने के लिये व्यवस्था की थी। इधर १७, १८ वर्ष से प्लेग का कष्ट सहन करते करते सर्वसाधारण को उतना भय नहीं रहा है, जितना प्लेग का प्रारम्भ हुआ था तब था। उस समय प्लेग के कारण सर्वसाधारण में हाहाकार मच रहा था। प्लेग के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की जनश्रुतियाँ सर्वसाधारण में प्रचलित हो रही थीं। सरकार ने प्लेग दमन के लिये कुछ ऐसे नियम बनाये थे, जो सर्व साधारण को कठोर प्रतीत होने लगे, प्लेग के अवसर पर पूना में गोरे सिपाहियों का पहरा कुछ असहनीय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि उन दिनों पूना में दो सरकारी अफसर डिप्टी कमिश्नर मि० रैण्ड और दूसरे प्लेग आफिसर लेफ्टिनेण्ट आयरेस्ट का खून होगया। सरकार ने नाटूभाई को १८१८ के तीसरे रेग्यूलेशन के अनुसार देश निकाला करदिया। लोकमान्य तिलक तथा अन्य कुछ महाराष्ट्र पत्रों के सम्पादकों पर प्रजा और सरकार के बीच अशान्ति फैलाने का अभियोग चला था। मिस्टर गोखले को भी विलायत में पूना में प्लेग ड्यूटी पर जो गोरे सिपाही थे उनके मनमाने कार्यों का समाचार मिला।

गोखले महोदय विलायत में केवल "वेलवी कमीशन" में साक्षी देकर ही चुप नहीं रहे थे वहां वे सभाओं में, अख़बारों में तथा पार्लीमेंट आदि के मेम्बरों में भी भारतवर्ष के सम्बन्ध में चर्चा किया करते थे, अतएव उन्होंने पूना के प्लेग सम्बन्धी समाचारों की विलायत में विशेष रूप से चर्चा की और इस विषय पर अधिक आन्दोलन किया। बम्बई गवर्नमेंट ने गोखले के इस आन्दोलन से अपना अपमान समझा और जब वे विलायत से भारतवर्ष को लौटे, तब बम्बई सरकार ने उनको विलायत में कही हुई बातों को साबित करने के लिये चिनौती दी और उनपर गवर्नमेंट मुक़दमा चलाने को तैयार होगई। उस समय महाराष्ट्र प्रान्त की भयङ्कर परिस्थिति थी, एक ओर तो राजद्रोही मुक़दमों की भरमार होरही थी दूसरी ओर प्लेग के कारण अनेक घरों में हाहाकार मच रहा था। जिन मित्रों के पत्र पाकर मिस्टर गोखले ने विलायत में प्लेग सम्बन्धी सरकारी व्यवस्था के विरुद्ध आन्दोलन किया था उन मित्रों में से गोखले की सहायता के लिये कोई आगे नहीं बढ़ा। इस भांति जब उन्होंने किसी को अपने पक्ष में साक्षी देने के लिये नहीं देखा तब उन्होंने खुल्लम खुल्ला सरकार से क्षमा मांगली। कहते हैं रानाडे ने भी गोखले को गवर्नमेंट से क्षमा प्रार्थना के लिये सलाह दी थी इस अवसर पर क्षमा मांगने के कारण, समय समय पर गोखले के प्रतिद्वन्दीगण उन पर भांति भांति के आक्षेप किया करते थे परन्तु उनको इससे कुछ दुःख नहीं हुआ और न उन्हें इस के लिये कभी पश्चात्ताप ही हुआ।

स्वागत और पुत्री की देशभक्ति

कहा जाता है मंडन मिश्र के घर में तोता मैना भी न्याय की चर्चा किया करते थे, मालूम नहीं उपर्युक्त कथा कहां तक सच है परन्तु जिस समय मिस्टर गोखले इङ्गलेण्ड से बम्बई आये थे, उस समय एक ऐसी घटना होगई जिससे ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने समान विचार अपने परिवार के बच्चों तक के कर रखे थे। जिस समय वे इङ्गलैंड से बम्बई आये, उस समय उनका बम्बई में बड़ी धूम धाम से स्वागत हुआ। भीड़ इतनी घनी थी कि मिस्टर गोखले को लेने को जो गाड़ी आई थी वह भीड़ से बहुत दूर खड़ी हुई थी। मिस्टर गोखले की लड़की भी आई थी जो बहुत भीड़ होने के कारण अपने पिता से मिल नहीं सकी। बहुत दूर से चुपचाप अपने पिता का स्वागत देख रही थी, मिस्टर गोखले उससे सब से पीछे मिले थे एक आदमी ने उस लड़की से कहाः—"तुम्हारे पिता अब हमारे हैं, अब तुम्हारे नहीं हैं, अब हमारे पिता हो गये हैं।" लड़की ने तुरन्त यह जवाब दियाः—"मुझे इसमें कुछ भी दुःख नहीं हैं, एक पिता के बदले में मैं इतने भाइयों को पाऊंगी" लड़की से यह उत्तर सुनकर उपस्थित जनमन्डली ने बड़े ज़ोर से करतल ध्वनि की।

प्लेग में सेवा

राजर्षि भर्तृहरि ने बहुत ठीक कहा है कि सब धर्मों से बढ़कर सेवाधर्म कठिन है। दीन दुखियों पीड़ितों और अनाथों की सेवा और सहायता करना जितना कठिन है

उतना और कठिन कार्य नहीं है दुर्भाग्यवश हमारे देश में यह बहुत बुरी चाल चल निकली है कि हम लोग अपने व्यक्तिगत सुख दुखों का ही अनुभव करते हैं। दूसरे के सुख दुःख की चिन्ता नहीं होती है। हम यह नहीं समझते कि आज जो विपत्ति हमारे पड़ोसी पर है कल हम को भी उसका सामना करना पड़ेगा। सच पूछिये तो हिन्दुओं के अधः पतन के अनेक कारणों में से एक उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ की ज़रूरत से अधिक मात्रा बढ़ना और पारस्परिक संघ शक्ति का अभाव भी है। गोखले महोदय ने पूना पहुंच कर प्लेग के अवसर पर सर्वसाधारण और सरकार की बहुत अच्छी सेवा की। बम्बई के तत्कालीन लाट, लार्ड सेण्डहर्स्ट तक ने गोखले महोदय की सेवा शुश्रूषा की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी। प्लेग के दिनों में जहां बाप बेटा तक एक दूसरे को बीमारी की दशा में छोड़ जाते हैं वहां गोखले महोदय ने अपने विकट साहस का परिचय दिया था। छोटे २ मकानों में घुसकर प्लेग पीड़ितों के पास पहुंचकर उनकी सेवा सुश्रूषा आदि की व्यवस्था की। प्लेग में गोखले की सेवा देखकर उनके कट्टर से कट्टर विरोधी भी शान्त होगये थे और उनकी प्रशंसा करने लगे थे।

प्रान्तिक कौन्सिल में प्रवेश

किसी ने सच कहा है:—"कवि बनाये से नहीं बनते हैं, वे जन्म से ही होते हैं"। सच पूछा जाय तो यह लोकोक्ति केवल कवियों के सम्बन्ध में ही नहीं घटती है प्रत्युत नेता,

वक्ता, लेखक, सम्पादकादि के विषय में भी फबती है। जिस भांति कवि के लिये प्रतिभा की आवश्यकता है, उसी भांति बिना प्रतिभा बुद्धि और विद्याके कोई कभी नेता नहीं होसकता है। जिस भांति सहृदय कविकी ही कविता का प्रभाव होताहै उसी भांति बिना सहृदयता के कोई नेता नहीं हो सकता है। एक देश के मुखिया के लिये सहृदय होना आवश्यक है। जिसके हृदय में दीनों के प्रति दया और दुःखियों के प्रति सहानुभूति नहीं है वह प्राकृत नेता नहीं है। यदि गोखले महोदय की जीवनी पर दृष्टि की जाय, उन्होंने इस देशके लिये जो कुछ कार्य किया है यदि उसपर विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि वे प्राकृत नेता थे, वे परमेश्वर के भेजे हुए मुखिया थे। उनके सहृदय और प्रतिभाशाली होनेमें किञ्चितमात्र भी सन्देह नहीं है। उन्होंने ३१ वर्ष की अवस्था में विलायत पहुंच कर बेलबी कमीशन में जो साक्षी दी थी, कमीशन की जिरह में जिस भांति उन्होंने निर्भीक और शान्त चित्त से अपने जो विचार प्रकट किये थे, वह विषय पीछे लिखा जा चुका है। उसके पीछे वे ३४—३५ वर्ष की अवस्था में बम्बई की प्रान्तिक कौं-सिल में सभासद निर्वाचित हुये। बम्बई की प्रान्तिक कौंसिल में सभासद रहते समय उन्होंने बड़े सारगर्भित विचार प्रकट किये थे। जिनका पता उनकी उस समय की वक्तृताओं से लगता है। उन्होंने केवल सरकारी कागज़ों के भरोसे ही न रहकर प्रजा से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों का स्वयं मनन किया था अनेक प्रकार से उनके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त की थी। बम्बई की प्रान्तिक कौंसिल में वे सदैव प्रजा का पक्ष ग्रहण करते रहे थे। सब से बढ़ कर मिस्टर गोखले की बंबई

प्रान्तिक कौंसिलमें वह वक्तृता थी, जिसमें उन्होंने सर फ़ीरोज़-शाह मेहता के उस प्रस्ताव का समर्थन किया था, जिस में मेहता ने सन् १६०१ में बम्बई की लेएड रेवन्यू कोड एमेएड-मेंट बिल का स्थगित करने के लिये परामर्श दिया था। मिस्टर गोखले ने इस बिल को स्थगित करने के लिये अनेक तर्क और युक्तियों द्वारा बम्बई गवर्नमेन्ट से प्रार्थना की थी परन्तु उसका कुछ परिणाम नहीं हुआ। इस वक्तृता में मिस्टर गोखले ने यह दर्शाया था कि उस नियम के पास होने से न तो काश्तकारों को किसी भांति का लाभ पहुंच सकता है न उन पर साहूकारों की कुछ प्रभुता हो सकती है इसकी अपेक्षा इस बिल के पास हो जाने से सरकारी खज़ाने में अधिक धन अवश्य पहुंचता और भूमि पर सरकार की प्रभुता का नियम दृढ़ होता। इस वक्तृता के अन्त में मिस्टर गोखले ने यह भी कहा था कि कौंसिल को जो अधिकार प्राप्त है उसका प्रयोग कौंसिल को ग़ैर सरकारी मेम्बरों के मत का मान रखने में करना चाहिये न कि अपमान करने में। ग़ैर सरकारी मेम्बर आनरेबुल मिस्टर (अब सर) मेहता, आनरेबुल मिस्टर खरे और आनुरेबल सर भालचन्द्र कृष्ण कौंसिल से उठकर चले आये तब मिस्टर गोखले भी उनके साथ कौंसिल से चल दिये, चलने से पहिले उन्होंने बम्बई के तत्कालीन गवर्नर महोदय से कहा था:—

"मैं इस प्रसङ्ग पर अपना निजू विचार प्रकट कर देना भी चाहता हूं। दोपहर के समय मैं ने इस बिल के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये थे, तब मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही थी जिस से यह प्रकट होता कि यदि बिल में परिवर्तन

स्वीकार न होगा तो मैं कौंसिल को छोड़ दूंगा। माई लार्ड! इस समय मैं अपने साथियों के पथ का अनुसरण करना चाहता हूं। मैं इस उपायका अत्यन्त क्लेश और दुखके साथ अवलम्बन कर रहा हूं। ऐसा करने से मेरा तात्पर्य श्रीमान् और श्रीमान् के साथियों को अपमानित करने का नहीं है केवल कर्त्तव्य-वश मुझे ऐसा करना पड़ा है क्योंकि मैं इस बिल से कुछ भी सहानुभूति रखने को तैयार नहीं हूं। गोखले के उपर्युक्त शब्द उनके चरित्र के महत्व सूचक हैं। उपर्युक्त शब्दों से प्रतीत होता है, गोखले महोदय कितने आत्म सम्मान प्रिय और निर्भीक थे इतने आत्मसम्मानप्रिय और निर्भीक होनेके कारण ही वे आज इस गौरव को प्राप्त हुए थे।

फ़रग्यूसन कालेज से बिदाई

सन् १८०२ ई० का वर्ष मिस्टर गोखले के जीवन में ही नहीं भारतवर्ष के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। इस वर्ष महात्मा गोखले ने पूना के फ़रग्यूसन कालेज के अध्यापक कार्य्य से बिदाई ग्रहण की और इसी वर्ष सर फीरोज़शाह मेहता के बड़े लाट की कौंसिल से अलग हो जाने पर वे कौंसिल के मेम्बर हुए। लगातार अठारह वर्ष तक फ़रग्यूसन कालेज की सेवा के पश्चात् वे उस से अलग हुए। फ़र-ग्यूशन कालेज से बिदा होते समय उनको उक्त कालेज के छात्र और अध्यापकों ने एक अभिनन्दन पत्र समर्पित किया था जिसके उत्तर में उन्होंने जो शब्द कहे थे उन शब्दों से ज्ञात होता है कि यद्यपि महात्मा गोखले कालेज से केवल

विशेष रूप से देशसेवा करने के लिये बिदा हो रहे थे, तथापि वे हृदय में कालेज से अलग होने में दुःख का अनुभव कर रहे थे। उन्होंने उस समय कालेज से बिदा होते समय जो शब्द कहे थे, उसमें उनका कालेज के प्रतिहार्दिक प्रेम टपकता है। उन्होंने अपने बिदाई के भाषण में एक स्थान पर कहा था:—"बहुत दिन हुए, मैंने एक कहानी पढ़ी थी कि एक आदमी समुद्र के किनारे रहता था, उसका बहुत अच्छा घर था, उसके बहुत सी उपजाऊ ज़मीन थी, उसके परिवार के लोग उससे बहुत प्रेम करते थे। परन्तु उसके सामने जो समुद्र था, उसका उसे विचित्र दृश्य दिखलाई पड़ता था। जब समुद्र की उत्ताल तरङ्ग शान्त होती थी तब उसे एक बच्चे के समान अपील करती हुई प्रतीत होती थी। जब समुद्र गरजता था, उसमें ज्वार भाटा उठता था, जब उसकी लहरें वेग से बढ़ती थीं, तब उस समय मनुष्य को समुद्र क्रोधित और गरजते हुए सिंह के समान अपील करता हुआ प्रतीत होता था। अन्त में वह अपनी सब चीज़ों को एक छोटी सी नांव में रखकर, समुद्र के बीच में नौका को खेने लगा। दो बार लहरों ने उसको पीछे हटा दिया, एक तरह से उसे चेतावनी दी परन्तु उसने उसकी कुछ परवाह नहीं की तीसरी बार उसने फिर चेष्टा की और निष्ठुर समुद्र ने उसको हड़प लिया। आज भी मेरी कुछ ऐसी ही स्थिति हो रही है। यद्यपि मैं इस समय कालेज में हूं, मेरे साथी, जिनके सङ्ग मुझे कार्य्य करने में गौरव और प्रसन्नता है, वे इतने उदार हैं कि मेरे दोषों को भी कुछ नहीं समझते हैं, मेरी थोड़ी सेवा को भी बहुत मानते हैं, तथापि मैं सार्वजनिक जीवनके तूफ़ानी

और अनिश्चित समुद्र पर जाने की ठान रहा हूं मुझे अपने हृदय से इस पथ के अनुसरण करने की प्रेरणा हो रही है केवल कर्त्तव्यवश अपने देश की सेवा के लिये ही इस मार्ग का अवलम्बन कर रहा हूं। इस देश में सार्वजनिक जीवन में बहुत कम पुरस्कार है, किन्तु अनेक निराशाएं और कठिनाइयां हैं"। वास्तव में देखा जाय तो मिस्टर गोखले का कथन सत्य ही है कि इस देश में सार्वजनिक कार्य्य करनेवालों को बड़ी बड़ी कठिनाइयों से सामना करना पड़ता है, पगपग पर निराशाएं उपस्थित होती हैं बहुत सम्भव है कि महात्मा गोखले को भी अन्य देशसेवकों के समान देश के अनेक कार्य्यों में निराश होना पड़ा हो; परन्तु निराशाओं और कठिनाइयों का सामना करने पर भी वे अन्त समय तक देश सेवा में हो जुटे रहे। उनका सार्वजनिक जीवनके अनिश्चित समुद्र में उतरना अच्छा ही हुआ।

इस व्याख्यान के अन्त में मिस्टर गोखले ने फ़रग्युसन कालेज के विद्यार्थियों को उक्त संस्था का महत्व बतलाते हुए यह परामर्श दिया था कि यदि जब कभी उनको इस संस्था के कुछ दोष भी प्रतीत हों तो वे उन दोषों के सम्बन्ध में उसी प्रेम से कुछ कहें. जैसे हम अपने माता पिता के सम्बन्ध में कहते हैं"। क्या मिस्टर गोखले के इन शब्दों से उनकी कालेज के प्रति ज्वलन्त भक्ति का दृष्टान्त नहीं मिलता है। इस भक्ति के कारण ही महात्मा गोखले ने फ़रग्यूसन कालेज की अभूत पूर्व सेवा की थी। फ़रग्युसन कालेजकी मिस्टर गोखले ने जो सेवा की थी, उसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है, यदि इस सम्बन्ध में उनको Fducational Missionary अर्थात् शिक्षा

का प्रचारक कहाजाय तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी। यदि महात्मा गोखले ने और कुछ सेवा न की होती तो भी जब तक फ़रग्युसन कालेज है तब तक भारतवर्ष में कम से कम महाराष्ट्र प्रान्त में उनकी पवित्र स्मृति सदैव रहती। इस समय भारतवर्ष में जितने कालेज हैं, उनमें फ़रग्युसन कालेज, लाहौर का दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालेज और काशी का सेन्ट्रल हिन्दू कालेज अपने ढङ्ग के निराले हैं, इन कालिजों के कार्य सञ्चालकों ने शित्ता प्रचार के निमित्त अपने सब स्वार्थ और महत्वाकाक्षाओं पर लात मारदी है। महात्मा गोखले, महात्मा हंसराज और प्रिन्सिपल पराञ्जपे का नाम जब तक भारतवर्ष में शित्ता का महत्व समझनेवाला एक बच्चा भी जीवित रहेगा तब तक बड़ी भक्ति और श्रद्धा से उच्चारण करता रहेगा। अभी हमारे देश में शित्ता की बहुत कमी है। इस समय शित्ता के प्रचार के लिये अनेक गोखले, बहुत से हंसराज और कितने ही पराञ्जपे की ज़रूरत है। क्या हमारे देश के नवयुवक वकालत आदि के फेर में न पड़कर महात्मा गोखले के जीवन से इतनी शित्ता ग्रहण नहीं कर सकते हैं कि अपनी जाति में शित्ता प्रचार के निमित्त, अपने देश भाइयों में ज्ञान की ज्योति का प्रचार करने के लिये अपने समस्त स्वार्थों पर लात मारदें। जिस दिन हमारे हृदय में यह पवित्र भाव होगा, उस दिन ही भारतमाता के कष्ट दूर होंगे।

कौन्सिल में गोखले

लार्ड कर्ज़न को इस देश से बिदा हुए लगभग दश वर्ष होगये हैं, परन्तु अभी तक भारतवासी उनके शासन को भूले

नहीं हैं। सन् १९०२ में जब लार्ड कर्ज़न का सितारा बुलन्दी पर था तब बड़ी राज्य व्यवस्थापक सभा (इम्पीरियल कौंसिल से सर फिरोज़शाह मेहता के अलग होने पर माननीय मिस्टर गोपालकृष्ण गोखले बड़ी व्यवस्थापक सभा के सभासद हुए। सच पूछिये तो सर फ़ीरोज़शाह मेहता के अलग होने से इस देश के निवासी जिस हानि की आशङ्का कर रहे थे, जिस हानि की सम्भावना समझे हुए थे, कौंसिल में मिस्टर गोखले के पहुंचने से वह आशङ्का वह सम्भावना केवल दूरही नहीं हुई प्रत्युत गोखले की कार्य पद्धति से ग़ैर सरकारी मैम्बरों में नवीन भावों (New spirit) का सञ्चार हुआ उन्होंने कौंसिल के ग़ैर सरकारी मेम्बरों को नवीन मार्ग प्रदर्शित किया यद्यपि गोखले महोदय से बम्बई निवासी भलीभांति परिचित थे, बम्बई की प्रान्तिक कौंसिल में उनके कार्य का परिचय पा चुके थे, पूना के म्युनिस्पल बोर्ड के चेयरमैन रहते समय उन्होंने कितनेही ऐसे महत्वपूर्ण कार्य किये थे जिससे बम्बई निवासियों को उनकी योग्यता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं था। तथापि विशाल भारतवर्ष में एक छोर से दूसरे छोर तक देश वासियों ने मिस्टर गोखले का महत्व उनके कौसिल में पहुंचने पर ही समझा। उन्होंने सन् १९०२ में कौंसिल में पहुंच कर पहलेही पहल, बजट बहस पर जो वक्तृता दी थी वह बड़ी विवेचना पूर्ण थी, उस वक्तृता की भारतवासियों ने ही नहीं अनेक उदार हृदय एङ्गलो इण्डियनों ने भी प्रशंसा की थी*

* मिस्टर गोखले की बजटवाली इस वक्तृता ने भारतवासियों के हृदय में नवीन आशा का सञ्चार करदिया था। स्वर्गीय मिस्टर रमेश चंद्र दत्तने

इस बजटवाली वक्तृता में मिस्टर गोखले ने कई बातें बड़े मार्के की कहीं थीं। अर्थ सचिव ने बजट की जो बचत दिखलायी, उसको मिस्टर गोखले ने मिथ्या प्रमाणित कर दिखलाया था।

जो आर० सी० दत्त के नाम से विख्यात हैं, बनारस की कांग्रेस में मिस्टर गोखले को सभापति करने के प्रस्ताव का अनुमोदन करते समय कहा था —"थोड़े दिन हुये उन्होंने (मिस्टर गोखले) ने बड़े लाट की कौंसिलमें बजट विचार पर चिरस्मरणीय वक्तृता दी थी उसी से उनका नाम राजनीतिज्ञों में होगया है। सज्जनों! मुझे मालूम नहीं कि आप लोगों ने इस वक्तृता के सम्बन्ध में क्या विचार किया होगा। किन्तु मैं उस वक्तृता को पढ़ते ही सोचने लगा कि ये भारतवर्ष के लिये coming man है। कौंसिलवाली सुन्दर वक्तृता में मिस्टर गोखले का विचार प्रकट करने का ढङ्ग और तर्क करने की शक्ति तथा प्रकृत प्रमाणों की विशेषता से यही प्रतीत होता है कि आखिर कौंसिल में हमारा भी एक ऐसा शूरवीर है जो अपने देश तथा देशवासियों के प्रति न्याय का अवलम्बन करेगा। लगातार वर्षों से हम ने बड़े लाट की कौंसिल की जो कारवाई देखी है यदि उससे मैं यह शब्द कहूं तो मैं समझता हूं कि मैं आप सब लोगों की जो यहां मौजूद हैं सम्मति प्रकट कर रहा हूं मिस्टर गोखले से बढ़कर कोई भी योग्य और न्याय परायण व्यक्ति हमारे पक्ष का समर्थन करनेवाला नहीं है।"

बनारस की कांग्रेस में ही मिस्टर गोखले को सभापति के लिये धन्यवाद देते हुये कौंसिल की वक्तृता के सम्बन्धमें माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी ने कहा था:—'लार्ड कर्ज़न छोटी उमर में भारत के बड़े लाट होकर आये थे। सौभाग्यवश भारतवर्ष के छोटी अवस्था के राजनीतिज्ञों में से बम्बई से बड़े लाट की कौंसिलमें एक प्रतिनिधि निर्वाचित हुआ। लार्डकर्ज़न तर्क करने की बड़ी शक्ति रखते थे उन्होंने देखा कि बम्बई से जो सभासद आया है वह उनकी टक्कर का है....... इङ्गलेण्ड ने अपना एक चमत्कारिक बड़ा लाट भेजा, हिन्दुस्तान ने कौंसिल में अपने युवक राजनीतिज्ञों में से एक को भेजा दुर्भाग्यवश इङ्गलेण्ड का निर्वाचन असफल हुआ और हिन्दूस्तान का निर्वाचन सफल हुआ

यहां पर न तो उनकी समस्त बजट सम्बन्धी वक्तृताओं के अनुवाद करने का स्थान है न प्रत्येक वर्ष की बजटवाली वक्तृता का साराँश ही दिया जा सकता है परन्तु इतना अवश्य पाठकों की सेवा में निवेदन करना चाहते हैं कि मिस्टर गोखले की चाहे जिस बर्ष की बजटवाली वक्तृता को उठालीजियेगा, उससे पता लगेगा कि वे प्रतिवर्ष बड़े लाट की कौंसिल में अपने देश की उन्नति के लिये ग़रीब प्रजा पर टैक्स (कर) बहुत न लगाने के लिये बड़े निर्भीक होकर अपने विचार प्रकट किया करते थे। उनकी चाहे जिस वर्ष की वक्तृता को उठा कर पढ़ लीजियेगा तो उससे यही ज्ञात होगा कि भारत सरकार को उन्होंने प्रतिवर्ष इस देश के धन का सदुपयोग करने के लिये बडे बड़े अमूल्य परामर्श दिये थे। सरकार सेना का जो व्यय बढ़ा रही थी उसको घटाने के लिये और शिक्षा प्रचार तथा अन्य कार्यों में खर्च करने के लिये उन्होंने प्रतिवर्ष सम्मति दी थी। कहते हैं कि मिस्टर गोखले की सैनिक व्यय के घटाने कीं प्रबल युक्तियां देखकर भारतवर्ष के भूतपूर्व जङ्गी लाट लार्ड किचिनर को तो यहा तक भय होगया था कि किसी दिन वे सरकार को अपने पक्ष में न करलें।

मिस्टर गोखले की बजटवाली वक्तृताओं में गम्भीर विचार तो होते ही थे पर भाषा भी बड़ी ओजस्विनी होती थी। वक्तृताओं के अन्त में वे जिस वर्ष देश की जैसी परिस्थिति होती थी उस परिस्थिति को लेकर गवर्नमेण्ट को चेतावनी दिया करते थे। सन् १९०५ से देश में जो नई लहर बहनी आरम्भ हुई तब से मिस्टर गोखले प्रायः गवर्नमेण्ट को

भारत केशिक्षित समुदाय के विचारों के अनुसार चलने की सलाह दिया करते थे। उन्होंने कितनी ही बार सरकार की दमननीति का विरोध किया था। सन् १६०८में उन्होंने अपनी बजटवाली वक्तृता के अन्त में कहा थाः—"My Lord, the government will no doubt put down, indeed it must put down—all disorder with a firm hand. But what the situation really requires is not the police man's baton or the soldier's bayonet but the statesman's insight wisdom and courage, इसका अर्थ यह है:—"माई लार्ड! इसमें सन्देह नहीं गवर्नमेण्ट समस्त अशान्ति को बल से दमन कर देगी। परन्तु वास्तव में परिस्थिति को दमन करने के लिये पुलिसमैन का डंडा अथवा सिपाही की संगीन दरकार नहीं है लेकिन परिस्थिति को दमन करने के लिये दरकरा है तो केवल "किसी राजनीतिज्ञ की दूरदर्शिता बुद्धि और हिम्मत" इस भांति मिस्टर गोखलेने बजटवाली वक्तृताओं में एक स्थान पर नहीं अनेक स्थानों पर सरकार को समय समय पर देश की स्थिति सुधारने की सम्मति दी थी। और जिसका कभी कभी प्रभाव भी पड़ता था। सन् १६०४ में मिस्टर ब्राडरिक ने जो उस समय भारत सचिव (स्टेट सेक्रेटरी) थे वड़े लाट को गोखले महोदय के कथनानुसार बजट (आय व्यय का अनुमानपत्र) बनाने का परामर्श दिया था। सन् १६०६ में गोखले की वक्तृता ऐसी मार्के की हुई थी कि लार्डमिन्टो तक को कहना पड़ा था कि पार्लीमेन्ट में भी ऐसी बहुत कम वक्तृताएं होती हैं। सन् १६०२ में जो अर्थ-

सचिव सर एडवर्ड बेकर थे, उन्होंने कहा थाः—"मुझे इससे बढ़कर और कोई इच्छा नहीं है कि मिस्टर गोखले मेरे बाद अर्थ सचिव हों"। सर फ्लीवुड विलसन ने कहा था कि बजट पर विचार बिना गोखले के ऐसा है जैसे शेक्सपीयर का नाटक हेमलेट उसके नायक डेनमार्क के राजकुमार के बिना किया जाय। संयुक्तप्रान्त के छोटे लाट सरजेम्स मेस्टन ने जिन दिनों वे अर्थ-सचिव थे मिस्टर गोखले की तुलना इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ स्वर्गीय मिस्टर ग्लेड-स्टोन से की थी। कहने का सारांश यह है कि मिस्टर गोखले की बजट सम्बन्धी वक्तताएं ऐसे उच्चभावों से परिपूर्ण होती थीं कि उनसे मतभेद रखनेवाले व्यक्तिओं तक को उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा करनी पड़ती थी। यह भारत-माता का दुर्भाग्य है कि उसकी योग्य सन्तानों का उचित आदर सत्कार नहीं होता है, यदि मिस्टर गोखले का जन्म भारतवर्ष में न होकर किसी दूसरे देश में हुआ होता तो वे किसी बहुत ऊंचे पद पर पहुंचते। यदि उनका इङ्गलैंड में ही जन्म हुआ होता तो बहुत सम्भव है कि वे वहां ग्लेडस्टोन के समान प्रधान मंत्री होते पर भारतवर्ष का ऐसा भाग्य कहां?

कौंसिल में दूसरे कार्य

इसमें सन्देह नहीं कौंसिल में पहुंच कर मिस्टर गोखले ने सदैव प्रजामत का पक्ष लिया था। लार्डकर्ज़न बिना किसी दूरदर्शिता का विचार करके बहुत सी ऐसी बात कर गये थे जिससे देश की काया ही पलट गई। उन्होंने

जिस समय सन् १९०३ में आफ़िशियल सिक्रेट एक्ट् बनाया था उस समय मिस्टर गोखले ने अनेक प्रबल युक्तियों द्वारा इस बिलका घोर प्रतिवाद किया था। लार्ड कर्ज़न ने इस बिलको इसलिये बनाया था कि सरकार की गोपनीय बातें प्रकट न होने पावें। इस बिल के केवल हिन्दुस्तानी अख़बार ही नहीं, बल्कि एङ्गलोइण्डियन अख़बार तक विरोधी थे। प्रजामत का सदैव से निरादर करनेवाले 'इङ्गलिशमैन" तक ने आफ़िशियल सिक्रेट एक्ट का प्रतिवाद किया था। पर लार्ड कर्ज़न ने किसी की नहीं सुनीं। मिस्टर गोखले ने कौंसिल में इस एक्ट् के प्रतिवाद में बड़ी ज़बरदस्त वक्तृता दी थी। इस एक्ट के बनजाने के पश्चात् मिस्टर गोखले को भारत सरकार ने सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान की थी। कहते हैं लार्ड कर्ज़न ने स्वयं मिस्टर गोखले को सी० आई० ई० की उपाधि देते समय बधाई की चिट्ठी लिखी थी। इस देशमें अनेक व्यक्ति उपाधियों के लिये उत्सुक रहते हैं। जैसे चातक स्वांति की बंद के लिये तड़पा करता है, वैसे ही वे सी० आई० ई० और रायबहादुर आदि के लिये भटकते रहते हैं। हमारे देश के अनेक व्यक्ति इन उपाधियों की प्राप्ति के लिये उचित अनुचित सभी उपायों का अवलम्बन करते हैं। परन्तु तब भी उन बिचारों के नसीब में उपाधियां नहीं होती हैं। एक मिस्टर गोखले थे, जिन को बिना किसी प्रयास के उपाधि मिली थी। "आफ़िशियल सिक्रेट एक्ट्" के विपक्ष में सम्मति देने के बाद मिस्टर गोखले को ज़ब यह उपाधि मिली तो साधारण मनुष्य यही समझने लगे कि "आफ़िशियल सीक्रेट एक्ट्" की प्रतिवाद वाली वक्तृता की योग्यता को देखकर ही सरकार ने उन्हें सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान की है।

आफ़िशियल सीक्रेट एक्ट के अलावे उन्होंने समय समय पर भारतीय प्रजा का अच्छा पक्ष लिया था जब लार्ड कर्ज़न "इण्डियन यूनिवर्सिटीज़ एक्ट" बना कर इस देश की उच्च शिक्षा को मटियामेट करने को उतारू हुए थे तब मिस्टर गोखले ने इस बिल का प्रबल प्रतिवाद किया था। इस भांति उन्होंने समय समय पर भारतवासियों का पक्ष लेकर स्वर्गीय मिस्टर आर० सी० दत्त के इन शब्दों को चरितार्थ कर दिया था—"आख़िरकार हमारा भी एक शूरवीर बड़ी व्यवस्थापक सभा में है, जो अपने देशवासियों और देश के प्रति न्याय का ग्रहण करेगा"।-जब सन् १६०७ में लार्ड मिन्टो ने शिमला शैल पर सभाओं के दमन करने का जो कानून पास किया था। उसका उन्होंने बड़े ज़ोरदार शब्दों में खण्डन किया था। उन्होंने अपनी उस वक्तृता के प्रारम्भ में बतलाया था कि इस प्रकार के कानूनों पर बड़ी व्यवस्थापक सभा का जो अधिवेशन कलकत्ता में हो, उस में विचार करना चाहिये। शिमला में इस ढङ्ग के कानून नहीं पास करने चाहिये।

चाहे गोखले महोदय की कौंसिल की वक्तृताएँ पढ़ लीजिये चाहे सर्वसाधारण में समय समय पर उनकी जो वक्तृता हुई हैं, उन्हें पढ़ लीजिये, उनसे यही पता लगता है कि गोखले अपनी वक्तृताओं में संयम रूपसे भाषा का व्यवहार करते थे। यह तो उनका ख़ास तौर से नियम था कि वक्तृताओं में अनावश्यक शब्दों को नहीं आने देते थे। पर साथ ही उनकी भाषा भी ऐसी होती थी, जिस में किसी के प्रति कटु शब्द न हों, चाहे भाषा बहुत जोशीली न हो पर प्रभावशालिनी अवश्य हो, मिस्टर गोखले की वक्तृताओं से यही ज्ञात होता है कि वे मनु के

इस सिद्धान्तको माननेवाले थे कि सत्य हो पर कटु न हो। अप्रिय शब्दों से किसीका जी न दुःखाया जाय पर साथही वे किसीसे सच्ची बात कहने से रुकतेभी नहीं थे। वे निडर हो कर बिना किसी सङ्कोच के सत्य बात प्रकट करते थे। उन्होंने सभाओं की रुकावटवाले कानून के प्रतिवाद में अपने विचार निर्भीक होकर प्रकट किये थे। उनकी युक्तियां बड़ी प्रबल होती थीं। सरकारी मेम्बर आनेरबल सर हर्बे एडमसन ने सभाओं को रोकने वाले बिलको उपस्थित करते समय कहा थाः—" माडरेट (नरमदल) एक्सट्रीमिष्ट (गरमदल) के सिद्धान्तों से समस्त भेद रखने पर भी उनको रोकने की चेष्टा नहीं करता। इसका मुंह तोड़ उत्तर मिस्टर गोखले ने वहीं पर यह दियाः—'एङ्गलो इण्डियन अख़बार सदैव शिक्षित हिन्दुस्थानियों के प्रति बुरेभाव प्रकट किया करतेहैं मुझे पूर्ण विश्वासहै कि आनुरेबल मेम्बर तथा अन्य सरकारी मेम्बर एङ्गलो इण्डयन अख़बारों के कथन से सहमत नहीं हैं तथापि वे उनकी निन्दा नहीं करते हैं"। एक स्थलपर उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा थाः—"यह सच है कि देश में अशान्ति फैल रही है, परन्तु क्या सरकार समझती है कि ऐसे कठोर उपायों से अशान्ति दब जायगी ? नहीं वह कभी नहीं दब सकतीः ऐसे कठोर उपायों से उसको और भी उत्तेजना मिलेगी। गवर्नमेन्टसे वैरभाव कहीं भी नहीं है, जहां कहीं असन्तोष है, उसका कारण प्रत्यक्ष है। यदि गवर्नमेन्ट चाहेतो उसको सहज में ही मिटा सकती है। हिन्दुस्तान के लोग हृदय से राजभक्त हैं। यह बात लार्ड कर्ज़न ने आज से पांच वर्ष पहिले दिल्ली दरबार में स्पष्ट कही थी,,।

मिस्टर गोखले ने कौंसिल में पहुंच कर हिन्दुस्तानी प्रजा कीभलाई की जो चेष्टाएं की थीं, उन सबका वर्णन इस छोटी पुस्तिका में हो नहीं सकता है। उनका लक्ष्य यही रहा कि ग़रीब भारत की प्रजा पर अन्याय न होने पावे। किन्तु मनुष्य की बुद्धि भ्रमात्मक होती है संसार में ऐसाकोई मनुष्य नही है जिससे भूल न होती हो' सन् १९१० में जब नवीन प्रेस एक्ट बना तब मिस्टर गोखले से भी भूल हो गई उन्हों ने उस एक्ट का अनुमोदन किया। कारण उसका यह था कि मराठी भाषा के कुछ अख़बारोंने *मिस्टर गोखले पर व्यतिगत इतने भद्दे और कड़े आक्षेप किये थे कि वे उस भ्रम में पड़ गये और उन्हों ने उस एक्ट का अनुमोदन करही दिया पर इस एक्ट के अनुमोदन करने से भी उन के चरित्र का यह महत्व प्रकट होता है कि भूल हो जाने पर वे इतने हठी नहीं थे कि अपनी भूल स्वीकार नहीं करते। वे इतने सरल हृदय थे कि जब उनको यह पता लगा कि प्रेस एक्ट से प्रजा के दुःखों के दूर करने में किस तरह की रुकावटें आरहा हैं, तब उन्होंने उस एक्ट को रद्द कराने में भरसक यत्न किया पर वे सफल मनोरथ न हुए। इसमें सन्देह नहीं जब कभी यह नवीन प्रेस एक्ट रद्द होगा तब मिस्टर गोखले की आत्मा को स्वर्ग में शान्ति मिलेगी।

मिस्टर गोखले का हृदय दीन दुःखियों के प्रति कठोर वर्त्ताव को देखकर पिघल जाता था। जब उन्होंने देखा कि भारतवर्ष के मज़दूरों को विदशों में किस भांति कष्ट मिलता

* नवीन प्रेस एक्ट के प्रतिवाद में माननीय श्रीयुत पं० मदनमोहन मालवीय जीकी बड़ी ओजस्वनी वक्तृता हुई थी।

है तब उन्होंने बड़े लाठ की कौंसिल में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि विदेशों में यहां से मज़दूर न भेजे जावें। दक्षिण अफ़रीका में भारतवासियों को जो काले रङ्ग के कारण बुरे भाव से देखा जाता था, उसको दूर करने के लिये मिस्टर गोखले ने बड़ा भारी प्रयत्न किया था, जिसके विषय में हम आगे लिखेंगे पर उन्होंने कौंसिल में उसकी चर्चा छेड़ कर बड़े लाट लार्ड हार्डिञ्ज तकको अपने पक्ष में कर लिया था यदि वे कुछ दिन और जीवित रहते तो दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतवासियों के दुख को सदैव के लिये मिटा जाते।

मिस्टर गोखले की प्रबल इच्छा थी कि भारतवर्ष का बच्चा बच्चा शिक्षा प्राप्त करे। यह हम पहले कह आए हैं कि बड़े लाट की कौंसिल में बजट सम्बन्धी उनकी जो वक्तृताएं होती थीं उनमें सेनादि के अनावश्यक व्ययों को घटा कर शिक्षादि प्रजा के उपयोगी कामों में ख़र्च करने की सलाह दिया करते थे। पर वे इससे ही सतुष्ट नहीं हुए, उन्होंने सन् १९११ में बड़े लाट की कौंसिल में मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा के लिये बिल उपस्थित किया था। जिसमें उन्होंने अकाट्य युक्तियों से यह सिद्ध कर दिखाया था कि भारतवर्ष में प्राथमिक शिक्षा का मुफ़्त अनिवार्य होना अत्यन्त आवश्यक है। शोक है मिस्टर गोखले का यह बिल पास नहीं होसका यदि उनका यह बिल पास हो जाता तो देश के बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने में कोई अड़चन प्रतीत नहीं होती। हमारे देश में अज्ञानता का प्रचण्ड राज्य है, ऐसे मनुष्यों की कमी नहीं है जो अपने बालकों को शिक्षा देना अपना कर्त्तव्य नहीं समझते हैं। साथ ही इस देश में इतनी

दरिद्रता भी बढ़ी हुई है। कि अनेक व्यक्ति धनाभाव के कारण अपने बच्चे को शिक्षा नहीं दे सकते हैं। यदि मिस्टर गोखले का शिक्षा बिल पास हो जाता तो इस देश की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्त्ति होती। पर इस देश का ऐसा भाग्य कहां जिससे मिस्टर गोखले के प्रारम्भिक शिक्षा सम्बन्धी विचार व्यवहार में परिणित होते। मिस्टर गोखले के सामने इस बात की आशा अवश्य थी कि वे एक न एक दिन कौंसिल में इस बिल को पास कराके छोड़ेंगे पर गोखले महोदय के विलीन हो जाने से यह आशा भी निराशा में परिणित होगई देखना चाहिये किस दिन यह बिल पास होता है।

मदरास में भ्रमण

विद्यार्थियों का सन्देश

यह पहले कह चुके हैं कि मिस्टर गोखले कांग्रेस में बहुत दिनों से शामिल हो गये थे। जब पूना में कांग्रेस हुई थी तब वे स्वागत कारिणी सभा के मन्त्री भी हुये थे। सन् १९०२ में वे आल इण्डिया कांग्रेस समस्त-भारतवर्षीय महासभा के संयुक्त मन्त्री हुये। सन् १९०४ में उन्हें कांग्रेस के संयुक्त मन्त्री होने की हैसियत से मदरास के कितने ही स्थानों में जाना पड़ा। मदरासियों ने मिस्टर गोखले का बड़े ठाट बाट से स्वागत किया। अनेक स्थानों में विद्यार्थियों ने उन्हें अभिनन्दन पत्र समर्पण किये। मदरास के समाचार पत्रों ने जिनमें बहुत से एङ्गलो-इण्डियन समाचार पत्र भी थे उनका जीवन चरित और व्याख्यान छापे। वहां की अनेक

सार्वजनिक संस्थाओं में उनके व्याख्यान हुये। सन् १६०४ की २८ वीं जुलाई को मदरास के पचप्पा कालेज के विद्यार्थियों ने उनको एक अभिनन्दन पत्र समर्पित किया था जिसके उत्तर में मिस्टर गोखले ने वहां के विद्यार्थियों को कई उपयोगी कार्य करने की सलाह दी थी। पहली बात उन्होंने विद्यार्थियों से यह कही थी कि विद्यार्थी को स्मरण रखना चाहिये कि कालेज के छोडने के बाद ही उनकी शिक्षा समाप्त न हो जाय पर उन्हें सदैव कालेज छोड़ने के पीछे भी ज्ञान प्राप्ति के लिये अध्ययन करते रहना चाहिये। इसके आगे उन्हों ने विद्यार्थियों को सर्व साधारण masses की स्थिति सुधारने के लिये परामर्श दिया था। फिर उन्होंने विद्यार्थियों का इस देश की स्त्रियों के दुःख दूर करने की सलाह देते हुए कहा कि समस्त स्त्री जाति एक मनुष्य के लिये जो ज्ञान रूपी जीवन की आवश्यकता है, उस से वञ्चित रक्खी गई है, यह किसी देशके लिये अच्छा नहीं है। धर्म सम्बन्धी बहुतसी पुरानी संस्थाएं भी केवल आकार में ही दिखलाई पड़ती हैं, पर उनके विचार काफ़ूर हो गये हैं तुम को जान लेना चाहिये कि तुम्हारे करने के लिये इस ओर भी बहुत से कार्य हैं इसके अतिरिक्त समस्त देश राजनैतिक परिस्थिति के विचार से भी अच्छी दशा में नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि जो लोग राजनैतिक समस्यामें कुछ अनुराग रखते हैं, उन्हें बड़ा काम करना है देश की औद्योगिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना चाहिये मिस्टर गोखले ने मदरास के विद्यार्थियोंको जो सन्देश दिया था, वह भारतवर्ष के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये है। क्या हमारे विद्यार्थी महात्मा

गोखले के इस सन्देश के अनुसार कार्य करने की चेष्टाकरेंगे।
गत वर्ष ही मिस्टर गोखले ने २४ वीं जुलाई को मलयापुर के साऊथ इण्डियन एसोसियेशन में अपने गुरु स्वर्गीय महादेव गोविन्द रानाडे के स्मारक में रानाडे पुस्तकालय खोला था।

विलायत में आन्दोलन

सन् १९०४ में बम्बई में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का बड़ा शानदार अधिवेशन हुआ था। प्रसिद्ध भारत हितैषी सर हैनरी काटन सभापति थे। कांग्रेस के उस अधिवेशन में निश्चय हुआ कि भारतवासियों का एक डेपूटेशन इंगलैंड जाकर वहांवालों को यहां की स्थिति समझावें। बस इस निश्चय के अनुसार श्रीयुत गोखले और लाला लाजपतराय सन् १९०५ में इंगलैंड गये थे। उन दिनों इंगलैंड में भी पार्लीमेन्ट के एलेक्शन (निर्वाचन) की धूम मची हुई थी। मिस्टर गोखले को राजनैतिक आन्दोलनके लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता था। उन्होंने पचास दिनकेभीतर पैंतालीस व्याख्यान दियेथे इसके अतिरिक्त अख़बारों में लेख लिखने अखबारों के संवाद दाताओं के मिलने पर उनके प्रश्नों के उत्तर देने तथा पार्लीमेन्ट के मेम्बरों से मिलकर भारत के दुःख की कथा कहने आदि के बहुत से कार्य किये थे। इन सब कार्यों में लगातार परिश्रम करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। उनके गले में बीमारी होगई थी और वह बीमारी यहां तक बढ़गई थी कि भारतवर्ष को लौटते समय जहाज पर ही गले में अस्त्र प्रयोग (ओपेरेशन) कराना पड़ा था। उसी वर्ष लार्ड कर्ज़न

की अदूरदर्शिता के कारण वङ्गविच्छेद होने से वङ्गाल में नई लहर उठने लगीं थीं। मिस्टर गोखले ने विलायतवालों का वङ्गविच्छेद के कुफल की ओर ध्यान आकर्षण किया था उन्होंने मेनचेस्टर में ६ वीं अक्टूबर सन् १९०५को भारतवर्ष में असन्तोष नामक एक वक्तृता दी थी। जिसमें उन्होंने विलायतवालोंको समझाया था कि जैसा आप अपने यहांकी पार्लीमेन्ट के मेम्बरों का चुनाव करेंगे वैसा ही भारतवर्ष के शासन पर प्रभाव पड़ेगा। उस समय उनके प्रवल युक्तियों के देने पर भी सरकार का ध्यान-"भारतवर्ष के असन्तोष" की ओर नहीं हुआ किन्तु वहां की जनता में इसकी विशेष चर्चा होने लगी और इसमें मिस्टर गोखले को किञ्चित् सफलता भी प्राप्त हुई थी।

भारतवर्ष को लौटना

सात समुद्र और तेरह नदी पार इङ्गलेण्डमें अपनी भारत माता के क्लेशों की चर्चा करके मिस्टर गोखले भारतवर्ष को लौटे। वम्बई और पूना में उनका बड़ी धूमधामसे स्वागत हुआ। उनको बधाई देने के लिये कितने ही स्थानों में सभाएं हुईं। लोकमान्य तिलक महोदय भी इन सभाओंमें सम्मिलित हुए थे और उन्होंने भी विलायत में इस ढङ्ग के आन्दोलन को उपयुक्त समझा था। इसी वर्ष मिस्टर गोखले "इण्डियन नेशनल कांग्रेस" के सभापति निर्व्वाचित हुए। सभापति निर्व्वाचित होने के कारण, अपनी वक्तृता में वङ्गाल की वास्तविक और यथार्थ परिस्थिति प्रदर्शित करने के लिये, उनको दो एक रोज़ के लिये, कलकत्ता भी जाना पड़ा था। यदि और

कोई सभापति होता, तो सम्भव है कि बङ्गाल की परिस्थिति बिना देखे भाले ही, अख़बारों के आधार पर अपनी वक्तृता में चर्चा कर देता। परन्तु नहीं मिस्टर गोखले ने स्वयं बङ्गाल की परिस्थिति देखना उचित समझा।

कांग्रेस के सभापति

सन् १६०५ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन हिन्दुओं के परम पवित्र तीर्थ विश्वनाथ पुरी (काशी जी) में हुआ था। उसके सभापति मिस्टर गोखले हुए। सच पूछिये तो कांग्रेसवालों ने मिस्टर गोखले को सभापति करके उनके गौरव की विशेष वृद्धि नहीं की किन्तु कांग्रेस को सम्मानित किया। बेचारे भारतवासियों के हाथ में अपने देश के गोखले जैसे महानुभावों को सभापति करनेके अतिरिक्त सम्मानित करने का और कोई उपाय नहीं था। सन् १६०५ में जब इस देश की भयङ्कर परिस्थिति थी. लार्डकर्ज़न की अदूरदर्शिता के कारण समस्त देश में असन्तोष फैला हुआ था। बहुत से शिक्षित भारतवासियों के हृदय में नवीन विचार और नवीन आकांक्षाएं स्फुरित हो रही थीं। तब गोखले जैसे प्राकृत नेता की ही आवश्यकता थी, जो दमन नीति आदि वायुके प्रबल झकोरे और असन्तोष रूपी समुद्र की उत्ताल तरङ्गों से राष्ट्रीय नौका की रक्षा करने में समर्थ हुए थे। उन्होंने सभापति की हैसियत से जो व्याख्यान दिया था, वह बड़ा सारगर्भित और ओजस्विनी भाषा में था। व्याख्यान के आरम्भमें युवराज और युवराज्ञी (वर्तमान सम्राट और सम्राज्ञी) के स्वागत में कुछ निवेदन करके और तत्कालीन बड़े लाट और लाटिनी

मिन्टों को बधाई देते हुए लार्डकर्ज़न की औरङ्गज़ेब से तुलना की थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा थाः—"सज्जनों! यह सच है कि सभी बातों का अन्त होता है। लार्डकर्ज़न की लाट-गिरी का भी अन्त आया। गत सात वर्ष से हम उस बिलक्षण मूर्तिको देख देखकर चकित होते थे। कभी व्याकुल होते थे, कभी क्रोध के मारे जल उठते थे। कभी दुःख से तड़फड़ाने लगते थे। यहां तक अब अनुमान करना भी कठिन होगया है कि वास्तव में हम उक्त मूर्त्ति से पार पागये हैं या नहीं" इसके आगे लार्ड कर्ज़न ने भारतवर्ष से चलते समय बम्बई की वाय-कुला क्लबमें जो वक्तृता दी थी उसकी आलोचना करते हुए उन्होंने कहा:-"उन्होंने (लार्ड कर्ज़न) ने वायकुला क्लब वाली अपनी वक्तृता में कहा है कि भारतवर्ष में प्रति सैकड़ा अस्सी मनुष्य अशिक्षित हैं तथा उन्हीं के लिये अङ्गरेज़ों को भारतवर्ष में परिश्रम करने की आवश्यकता है। वे (लार्ड कर्ज़न) बाकी मनुष्यों के अर्थात् शिक्षित मनुष्यों के मत कुछ समझते ही नहीं। मि० ग्लेडस्टोन कहा करते थे कि स्वा-धीनता मनुष्य को उन्नति की चोटी पर पहुंचा देती है। किन्तु लार्ड कर्ज़न इस बात को नहीं मानते थे। सर्वसाधारण की महत्वाकांक्षा से उनकी सहानुभूति नहीं थी। पराधीन जाति में महत्वाकांक्षा के चिन्ह देखकर वे बेतरह बिगड़ते थे और उसे दमन करना चाहते थे। शायद इसी कारण उन्होंने वायकुला क्लब में कहा था:-"भारतवर्ष की भलाई के लिये ही मैंने भारतवासियों को किसी प्रकार का राजनैतिक अधिकार नहीं दिया था"।......'वायकुला क्लब वाली वक्तृता में लार्ड कर्ज़न ने शिक्षित तथा अशिक्षित मनुष्यों के स्वार्थ

जुदे जुदे बतलाये हैं। जो व्यक्ति प्रजा के स्वत्वों की आशा को जड़ मूल से खोदना चाहते हैं उनके लिये इस प्रकार के दो सम्प्रदायों के स्वार्थों को अलग करना ठीक है। जब लार्ड कर्ज़न ने देखा कि भारतवर्ष के शिक्षित मनुष्य उन पर बिगड़े हैं तब उन्होंने अशिक्षितों का आश्रय ग्रहण किया। लार्ड कर्ज़न कह गये हैं कि अशिक्षितों के हित के लिये ही मैंने लगान घटाया है, और प्राथमिक शिक्षा तथा नहर खुदवाने के लिये सरकारी खजाने से रुपया देना स्वीकार किया है। उनकी ऐसी बातों से यह प्रतीत होता है कि शिक्षित मनुष्य इस कार्य को करने में गवर्नमेंट को रोकते थे, अथवा परवाह नहीं करते थे। किन्तु सभी को मालूम है कि इन्डियन नेशनल कांग्रेस इन विषयों में बहुत दिनों से उन्नति के लिये प्रार्थना कर रही है। चार वर्ष पहले जब सरकारी ख़जाने में ७ करोड़ रुपया बचा था, उस समय मैंने व्यवस्थापक सभा में लगान घटाने की प्रार्थना की थी। परन्तु उस समय लार्ड कर्ज़न ने कहा था कि दरिद्र प्रजा को बहुत माल गुज़ारी देनी नहीं पड़ती, पर उन्हीं लार्ड कर्ज़न ने बिदा होने के समय यह डींग मारी है कि मैंने दरिद्रों के उपकार के लिये नमक का लगान घटा दिया है"। इस भांति मिस्टर गोखले ने अनेक विषयों की आलोचना की थी। बङ्गविच्छेद का भी प्रबल विरोध किया था, उस समय जो स्वदेशी आन्दोलन होरहा था। उस का समर्थन किया। आगे उन्होंने कौंसिलों का सुधार, स्टेट सेक्रेटरी की कौंसिल में तीन हिन्दुस्तानी सभासदों का होना हिन्दुस्थान के समस्त जिलों में एडवरसरी बोर्डों का स्थापन करना जिनका उद्देश्य यह हो कि जिलों के प्रधान सर्वसाधा-

रण से सम्बन्ध रखनेवाले कार्यों के करने के पूर्व सर्वसाधारण से सलाह ले लिया करें। विचार और शासन विभाग का अलग करना सेना का व्यय घटाना, प्रारम्भिक शिक्षा का विस्तार करना, शिल्प तथा औद्योगिक शिक्षा को उत्तेजना देना आदि आवश्यक विषयों की ओर गवर्मेंट तथा सर्वसाधारण का ध्यान आकर्षण किया था। सर्वसाधारण ने मिस्टर गोखले की इस वक्तृता को बहुत पसन्द किया था।

भारत सेवक समिति

इण्डियन नेशनल कांग्रेस के सभापति होने से पूर्व उसी वर्ष सन् १६०५ में १२ जून को मिस्टर गोखले ने भारत सेवक समिति (The servants of India Society) स्थापित की थी। हमारे देश में संस्थाओं की कमी नहीं है, बहुत सी संस्थाएं हैं पर यह संस्था अनूठी है। प्रतीत होता है कि मिस्टर गोखले का " भारत सेवक समिति " की स्थापना से उद्देश्य यह था कि इस मृतप्राय देश के निवासियों के हृदय में देश सेवा का भाव वैसाही प्रबल होजाय जैसे एक ईसाई पादरी को अफ़रीका के जङ्गलों में अपने धर्मप्रचार का भूत सवार होजाता है। भारत सेवक समिति इसी उद्देश्य से स्थापित हुई है कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों को तय्यार करे जो धार्मिकभाव से प्रेरित होकर, भारतमाता की सेवा के लिये, अपना जीवन अर्पण करें और नियमबद्ध उपायों का अवलम्बन करके भारतवासियों की राष्ट्रीयता की जागृति में सहायता पहुंचावें। और इसमें मिस्टर गोखले को अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई थी, भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों से

से अङ्गरेज़ी की उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक सज्जनों ने अपने स्वार्थ को लात मारकर इसमें योग दिया है।

इस समिति के सदस्यों को मुख्यतः पाँच बातों की चेष्टा करनी होती है:—

(१) अपने वचन और व्यावहारिक दृष्टान्त द्वारा सर्वसाधारण में मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न करना और उसकी पूर्त्ति, त्याग और सेवा से करना।

(२) राजनैतिक शिक्षा और आन्दोलन के कार्य्यों का संगठन करना और देश के लोकमत को प्रबल बनाना।

(३) भिन्न भिन्न जातियों में प्रेम और सहयोग बढ़ाना।

(४) शिक्षा कार्य्यों को विशेषतः स्त्रियों की शिक्षा, पिछड़ी हुई जातियों की शिक्षा वैज्ञानिक और औद्योगिक शिक्षा के आन्दोलनों को सहायता करना।

(५) अछूत जातियों को उठाना।

समिति में प्रवेश होते समय प्रत्येक सभासद को नीचे लिखी हुई सात प्रतिज्ञाएं शपथ पूर्वक करनी पड़ती हैं:—

(१) उसके हृदय में प्रथम स्थान देश का होगा। और अपना सर्वस्व त्याग कर उसकी सेवा करेगा।

(२) देश सेवा करने में वह अपने व्यक्ति लाभ की चेष्टा नहीं करेगा।

(३) बिना किसी जाति अथवा धर्म के वह समस्त भारतवासियों को अपना भाई समझेगा और सब की भलाई के लिये काम करेगा।

(४) समिति उसको तथा उसके परिवार के निर्वाह योग्य जो वृत्ति दे सकेगी, वह उसी से सन्तुष्ट रहेगा वह

अपनी शक्ति का कुछ भी भाग धनोपार्जन करने में व्यतीत नहीं करेगा।

(५) वह अपना पवित्र जीवन व्यतीत करेगा।

(६) वह किसी से व्यक्ति गत झगड़ा नहीं करेगा।

(७) वह समिति के उद्देश्यों पर सदा दृष्टि रखेगा और यथाशक्ति उसके कार्य की वृद्धि करेगा। समिति के उद्देश्यों के विरुद्ध वह कभी कोई कार्य नहीं करेगा।

दो प्रकार के सभासद

इस समिति के दो प्रकार के सभासद होते हैं। (१) साधारण सदस्य और (२) शिक्षार्थी सभासद (Meembrs under training) समितिके प्रधान स्वयं मिस्टर गोखले थे वे " प्रथमसदस्य " कहलाते थे, प्रधान को अन्य सभासदों से कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं। प्रत्येक सदस्य को प्रवेश के समय से ५ वर्ष पर्यन्त समिति में रहकर विशेष शिक्षा प्राप्त करनी होती है। अर्थात् ५ वर्ष तक वे ऐसे विषयों को अध्ययन और मनन करते हैं कि जिससे उन्हें अपनी देश दशा तथा देशवासियों की स्थिति का पूरा ज्ञान होजाय। इस नियम से एक बड़ा भारी लाभ यह है कि भारत सेवक समिति के सदस्यों को अपने देश की दशा से पूरी जानकारी होजाती है।

शिक्षार्थी सभासद को अपनी शिक्षा के समय में प्रथम सभासद की रेख देख और अभिभावता में रहना पड़ता है उसको प्रथम सभासद के निर्दिष्ट (बतलाये हुए) विषयों का मनन तथा कार्य्यों को करना पड़ता है। कार्य्य और अध्ययन की इस ढङ्ग से व्यवस्था की जाती है कि पांच वर्ष में

शिक्षार्थी सभासद को भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागोंके निरीक्षण करने में व्यतीति करने पड़ते हैं और शेष तीन वर्ष वह समिति के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करता है

साधारण सभासद को भी जिसने पांच वर्ष का अपना अध्ययन समाप्त करलिया है. प्रथम सभासद के बतलाये हुए समिति के विशेष कार्य के लिये भारतवर्ष के किसी स्थान में जाना पड़ता है । प्रथम सभासद और कौंसिल जो कुछ आज्ञा और आदेश उसे करदेते हैं, उसको उन्हीं के अनुसार चलना पडता है तात्पर्य यह है कि इस संस्थाके सभासदों को नियमों का पालन करना खूब सिखाया जाता है वे स्वेच्छाचारी नहीं होते हैं । भारतवर्ष की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के मटियामेट होजाने का कारण यह भी है कि उनमें नियमों को पैर तले रौंदकर लोग अपनी धान्धली मचाया करते हैं परन्तु भारत सेवक समिति में सभासदों के नियमों की रक्षा करना ख़ास तौर पर सिखलाया जाता है ।

समिति के सभासदों को स्वार्थत्याग पूरा करना पड़ता है समिति में जो सभासद शिक्षा पाते हैं, उनके परिवार की सहायता के लिये केवल तीस रुपये मासिक और साधारण सदस्यों को ५० रुपये मासिक वृत्ति मिलती है । इसके अतिरिक्त समिति में कुछ " स्थायी सहकारी " भी होते हैं, जो समिति को योग्यता पूर्वक सहायता देने के लिये वेतन पर रखलिये जाते हैं । ये सहकारी तीन वर्ष तक काम करने के बाद विशेष योग्य समझे जाने पर समिति के सदस्य भी हो सकते हैं ।

समिति का प्रधान कार्यालय पूना में है, वहां पर इसका

विशाल भवन बना हुआ है, २३ एकड़ भूमि उसके आधीन है लगभग एक लाख की उसकी सम्पति है। "ज्ञान प्रकाश" नामक मराठी दैनिक पत्र, प्रेस और 'बम्बई प्रेस' भी समिति की सम्पत्ति है। पूना के अतिरिक्त संयुक्त प्रान्त मदरास, मध्य प्रान्तादि में भी इसकी कई शाखाएं हैं सब से अधिक सदस्य बम्बई की शाखा सभा में हैं और सब से कम मध्यप्रदेश की शाखा के हैं। मध्यप्रदेश की शाखा सभा से "हितवाद" नामक अङ्गरेज़ी का साप्ताहिक पत्र निकलता है। संयुक्त प्रान्त की शाखा सभा ने बङ्गाल की बाढ़ तथा गतवर्ष में हरद्वार के कुम्भ के मेले पर बहुत अच्छा कार्य किया है। लखनऊका प्रसिद्ध उर्दू पत्र-"हिन्दुस्तानी" जिसके स्वामी—स्वर्गीय बाबू गङ्गाप्रसाद वर्मा थे संयुक्त प्रान्त की शाखा सभा के आधीन है।

बम्बई की शाखा सभा गुजरात अहमदनगर और संयुक्त प्रांत के अकालों के समय लोकोपयोगी कार्य कर चुकी है। बम्बई की शाखा ने कई सहयोग समितियां, मेहतरों के ऋण निवारणार्थ, कुलियों की सहायक समिति आदि खोली हैं। "सोशल सर्विस लीग" भी बम्बई की शाखा सभा के आधीन है-"सोशल सर्विस लीग"* ने रात्रि पाठशाला, गश्ती पुस्तकालय, होलिका सम्मेलन आदि अनेक लोकोपयोगी कार्य किये हैं लीग में दोसौ स्वयं सेवक हैं।

मदरास की शाखा सभा के प्रधान माननीय मि० श्री निवास शास्त्री हैं जो वहां की प्रांतिक कौंसिल के सभासद हैं और उक्त शास्त्री महोदय ही मिस्टर गोखले के उत्तराधिकारी हुये हैं।

मिस्टर गोखले आज नहीं हैं पर उनकी भारत सेवक

समिति से इस देश की भलाई की बहुत कुछ आशा है। यहां पर यह कह देना भी अप्रासंगिक न होगा कि सदैव हिन्दुस्थान की अच्छी बातों से चिढ़ने वाले सरवालंटाइन शिरोल तक ने गोखले की भारत सेवक समिति की अपनी पुस्तक "इण्डियन अनरेस्ट" में मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कर्मवीर गान्धी भी इस समिति के सदस्य होना चाहते थे और वे महात्मा गोखले को अपना गुरू समझते हैं परन्तु कई विषयों में मतभेद होने से यह उचित समझा गया कि पहले वे भारत वर्ष में भ्रमण करके यहां के देशकी परिस्थिति समझ लें तब समिति के सदस्य हों परमात्मा वह दिन दिखलावें कि कर्मवीर गांधी भी इस समिति में सम्मिलित होकर अपनी कर्मवीरता का भारतवासियों में विशेष रूपसे परिचय दें। इस समय जब सारा देश मिस्टर गोखले के शोकसे विह्वल होरहा है तब क्या देशवासियों का यह कर्तव्य नहीं है कि वे भारत सेवकसमिति की विशेष रूपसे धनकी सहायता करें जिससे मिस्टर गोखले की हार्दिक इच्छा इस देशमें राष्ट्रीय प्रचार का National Missianaries के उत्पन्न करने की पूर्ण हो।

पुनः विलायत गमन
और
स्वराज्य पर निबन्ध

समाचार पत्रोंके पाठकोंसे अविदित नहीं है कि सन् १९०६ में भारतवर्ष की कैसी भयङ्कर परिस्थिति थी। उन दिनों बङ्गाल में बड़ी हलचल मची हुई थी। एक ओर तो बङ्ग

विच्छेद के कारण बङ्गाली लोग अपने आवेश को रोकने में समर्थ नहीं हुये थे, दूसरी ओर गवर्नमेंट ने भी दमननीति का अवलम्बन करलिया था। इस परस्परकी खैंचातानीका परिणाम बङ्गाल के लिये बहुत बुरा हुआ। किसी किसी अदूरदर्शी बङ्गाल के हाकिम को स्वदेशी तक राजद्रोह दीखने लगा सार्वजनिक सभाओं में भी उन्हें राजद्रोह की बू आने लगी। उन्हें बङ्गाल में बहुत से भले आदमियों को स्पेशल कान्सटेबिल बनाना पड़ा था। मिस्टर गोखले का ध्यान भी देश की, विशेषतः बङ्गाल की इस परिस्थिति की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने उस वर्ष बजट पर वक्तृता देते हुये गवर्नमेंट को सावधान किया था। जिसका उस समय के बड़े लाट लार्डमिन्टोजैसे सज्जनके हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। बजट की वक्तृता देने के पश्चात् मिस्टर गोखले बनारस कांग्रेस के निश्चय के अनुसार फिर विलायतवालों का इस देश की परिस्थिति की ओर ध्यान आकर्षण करने और राजनैतिक आन्दोलन करने के लिये पहुंचे। जब मिस्टर गोखले विलायत को जा रहे थे, तब सारे देशकी निगाह बारिसाल की ओर लगी हुई थी कि देखें, बारिसाल में बङ्गाल की प्रान्तिक कान्फरेन्स निर्विघ्न होने पाती है या नहीं। यह आशङ्का निर्मूल नहीं हुई। वहां की लोकल पुलिस ने राह चलते हुये प्रतिनिधियों पर लाठी फटकारी, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को गिरफ्तार किया और उनपर पांच सौ रुपये जुर्माना हुआ जो हाईकोर्ट से खारिज होगया। इङ्गलेण्ड में पहुंच कर अनेक सभाओं में व्याख्यान देकर मिस्टर गोखले ने वहांवालों का ध्यान इन घटनाओं की ओर आकर्षित किया था। उन्होंने लार्ड (तब मिस्टर)

मोर्ले से कईबार भेंट की थी उस समय भारत सचिव (सेक्रेटरी आफ़ स्टेट) ने बंगाल में दमननीति के कारण जो कई असुविधायें थीं उनको दूर कर दिया था जिसके विषय में बहुत से लोगों का विश्वास है कि मिस्टर गोखले ने कईबार भारत सचिव से जो मुलाक़ात की थी उसी के कारण दमन-नीति की कुछ कड़ाई कम होगई थी।

इंगलेण्ड में मिस्टर गोखले इतना करके ही चुप नहीं हुये उन्होंने वहांवालों को भारतवासियों के उच्च विचार और महात्वाकांक्षाओं का विशेष रूप से परिचय दिया। उन्होंने उसी वर्ष लन्दन ईस्ट इण्डिया एसोसियेशन नामक सभा में स्वराज्य (Self government) नामक एक निबन्ध पढ़ा था, जिसमें उन्होंने पार्लीयामेंट के सन् १८३३ के चारटर एक्ट और सन् १८५८ में महारानी विक्टोरिया ने जो घोषणा भारत के सम्बन्ध में की थी, उसकी बात उठाकर कई बातें उन्होंने गवर्नमेंट के विचारने योग कहीं थीं, जो लोग यह समझते हैं कि शिक्षित भारतवासियों का प्रभाव बहुत कम है, और उनकी जातियों और धर्म के बखेड़े के कारण शिक्षित लोगों की बात सर्वसाधारण नहीं मानते इसका मिस्टर गोखले ने खण्डन करते हुये कहा था:—* 'पहिले तो यह (शिक्षित) लोग अपने समाज में मस्तिष्क का काम देते हैं, अर्थात् ये केवल अपने ही लिये नहीं वरन् अपने अपढ़ जाति भाइयों के लिये भी सोचते हैं। इसके सिवाय इन्हींलोगों के हाथ में, भारतवर्ष के अंगरेज़ी और देशी भाषाओं के

*इस वक्तृता के अनुवाद में नागपुर के प्रकाशित हिन्दी ग्रन्थमाला से प्रकाशित अनुवाद से सहायता ली गई है।

समाचार पत्र हैं देशी समाचार पत्र केवल उन्हीं डेढ़ करोड़ "देशी भाषा पढ़े" लोगों के विचार नहीं गढ़ते हैं, जो वाला वाला उनके अधिकार में हैं, किन्तु वे और भी कई करोड़ लोगों के विचारों पर अपना असर डालते हैं, जिनके पास वे किसी दूसरी रीति से पहुंचते हैं उस देश अर्थात् हिन्दुस्तान में जो कुछ साधारण सम्पति है, वह सब पढ़े लिखे लोगों की ही है। इस बात को रद्द करने के लिये अर्थात् शिक्षित लोगों के प्रभाव का नाश करने के लिये अफ़सर लोग बहुधा उन प्राचीन ऐतिहासिक घरानों के लोगों की ओर आशा पूर्ण दृष्टि से देखते हैं, जो राष्ट्र विप्लव के समय अगुआ बने थे, पर साधारण लोगों के मन में उनका अब कुछ भी प्रभाव नहीं है, क्योंकि आजकल के शान्तिमय और उन्नति के समय में, टूटी फूटी और जङ्ग खाई तलवारें अपनी शक्ति और प्रभुता स्थापित करने के लिये, शिक्षित लोगों के विचारों का सामना नहीं कर सकतीं। इस तरह पढ़े लिखे हिन्दुस्तानियों का प्रभाव अपने देशवालों पर बहुत है और वह दिन दिन बढ़ता ही जानेवाला है। रही जाति और धर्म के विभागों की बात, सो ये भी अब उतने तेज़ नहीं हैं, जितने वे कभी पहिले थे। पचास वर्ष की शिक्षा और सौ वर्ष के समान कानून, एक समान राज्य-शासन, एक समान दुख और एक समान दुर्बलता का स्वाभाविक फल भारतवर्ष में भी दिखाई दे रहा है। अलीगढ़ के मुसलमानों का राजनैतिक हलचल की आवश्यकता समझना, वर्तमान समय का सार्थक चिन्ह है। ऐसा सम्भव नहीं है कि यदि अलीगढ़ की कार्य सूची प्रकाशित की जाय तो वह कांग्रेस की कार्य सूचीसे किसी

प्रकार जुदी होगी यद्यपि यह नई संस्था कुछ समयतक अपना काम-काज अलग ही चलावे, तो भी वह एक न एक दिन कांग्रेस की बड़ी संस्था में मिल जानेवाली है।

जिस दिन मिस्टर गोखले ने मुसलमानों के सम्बन्ध में उपर्युक्त विचार प्रकट किये थे उस दिन किस को ख़बर थी कि शीघ्र ही उनकी भविष्यतवाणी सफल होगी। आज हम देखते हैं कि हमारे मुसलमान भाई मिस्टर गोखलेके उपर्युक्त विचारों के अनुसार ही राजनैतिक क्षेत्र में अपनी कार्य सूची कांग्रेस के समान ही प्रगट कर रहे हैं। यहां तक कि मुसलिम लीग ने भी अपनी कार्य सूची पलट दी है।

मिस्टर गोखले ने अपने इस निबन्ध में एक स्थान पर कहा है:—"यह सत्य है और हम भी स्वीकार करते हैं कि पूर्वी देशों को, पश्चिमी पद्धति पर ही बहुत सावधानी के साथ और परीक्षा के तौर पर, अपनी उन्नति के मार्ग में चलना होगा, पर चालीस वर्ष में जापान में जापान ने जो कुछ किया है वह भारत सौ वर्ष में अवश्य कर लेता। इन दोनों मामलों में दो सरकारों (अर्थात् जापानी और अंगरेज़ी सरकारों) की प्रवृत्ति ही, भेदका मुख्य कारण है"। लार्डकर्ज़न ने स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र के बड़े ही उलट पुलट अर्थ किये थे। मिस्टर गोखले ने इस निबन्ध में लार्डकर्ज़न के किये हुये घोषणा पत्र के अर्थों का तर्क और युक्ति पूर्ण खण्डन किया था। इस निबन्ध में मिस्टर गोखले ने भारतवासियों को जो बड़ी नौकरियों का द्वार बन्द है उस का भी खण्डन किया था। एक स्थान पर उन्होंने कहा है इस समय केवल कानून का मैदान उस में भी थोड़ा ही भाग

हम लोगों के लिये खुला है और उसमें हिन्दुस्तानी लोग मान-वृत्तकी चोटी तक चढ़ते दिखाई देते हैं और यदि हमारे देश-वासी प्रधान न्यायाधीश (चीफ़ जस्टिस) और एडवोकेट जनरल के पदों के योग्य पाये जाते हैं, तो उन्हें आबकारी, अफ़ीम, नमक, चुंगी, डाक, तार, पैमाइश, सेना और दूसरे महकमों की नौकरी न देना अन्याय है। वर्तमान प्रबन्ध में, भारत का गुरुत्व-केन्द्र लन्दन में है। हम इस अस्वाभाविक प्रबंध के विरोधी हैं और बड़े ज़ोर से यह कहते हैं कि हिन्दुस्तान में नौकरी करने वालों को जो परीक्षा देनी होती है, वह केवल लन्दन में न हो, किन्तु वह एक ही समय भारत और इङ्गिलिस्तान में होवे। अब हम कलकत्ते के बड़े लाट और बम्बई और मदरास के छोटे लाटों की प्रबन्ध कारिणी सभाओं (Executive Councils) में और स्टेट सेक्रेटरी की कौंसिल में भी भरती होने का दावा करते हैं। आगे इस निबन्ध में मिस्टर गोखले ने और भी कई विचारणीय बातें कही थीं, उन्होंने एक बड़े मार्के की यह बात कही थी कि ज़िले का प्रबन्ध जो भारतीय-शासन का मूल है केन्द्र शासन से हटा लिये जावें अर्थात् ज़िले का प्रबन्ध स्थानीय लोगों की सहायता से चलाया जावे। पहिले तो उसे केन्द्र सरकार के दफ़्तरों और कई ख़ास मुहकमों के अधिकार से धीरे धीरे युक्त करना चाहिये, और दूसरे ज़िले के लोगों को उसकी चाल पर अधिक अधिक अधिकार मिलने का मौक़ा देना चाहिये, यहां तक अन्त में कर्मचारी लोग सचमुच (जैसे कि वे अभी केवल बातों में समझे जाते हैं) लोगों ही के नौकर (Public servents) बन जावें। इस

काम की पहिली सीढ़ी यह होगी कि, ज़िले के अधिकारियों के साथ शासन के काम में लोगों के चुने हुए अगुआ लोगों की कमेटी का मेल पहिले पहिल केवल सलाह के लिये और पीछे क्षमता के अधिक अधिकार देकर कराया जावे"। इसके आगे मिस्टर गोखले ने अपने इस निबन्ध में स्थानीय स्वराज्य (Local Self Government) के विषय में कहा थाः—"अभी वह देश भर में, उसी स्थान पर मौजूद है जहां २५ वर्ष पहले, लार्ड रिपन ने उसे रक्खा था और कहीं कहीं तो वह पीछे हट गया है। अब अधिक शिक्षित स्थानों में, स्थानीय कमेटियां पूरी प्रतिनिधि बनाई जावें और यद्यपि उन पर सरकारी अधिकार कम न होने पावे तो भी वे अफसरों की छोटी छोटी और सतानेवाली बाधाओं से मुक्त करदी जावें। इसके आगे मिस्टर गोखले ने कौंसिल के विस्तार आदि के विषयों पर विशेष बल दिया है, मिस्टर गोखले की अनेक वक्तृताओं में इस ढङ्ग के भाव भरे हुए हैं पर खेद है कि स्थान की कमी से हम उनको यहां उद्धृत करने में असमर्थ हैं।

उत्तर भारत में दौरा और लालाजी का देश निकाला

समाचार पत्रों के पाठकों से यह अविदित नहीं है कि सन् १९०६ और ७ में इस देश के निवासियों में राजनैतिक विषयों को लेकर दो दल होगये थे। जो अभी तक मिटे नहीं हैं। उस समय इस देश के निवासियों की प्रवृत्ति ही दूसरी ओर थी, राजनैतिक कार्यकर्ता गरम और नरम दल में

विभक्त होगये थे। सन् १६०६ में कलकत्ते में जब कांग्रेस हुई थी तब इस देश के नेताओं की परस्पर खैंचातानी से भय था कि कहीं कांग्रेस भङ्ग न होजावे परन्तु कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन भारत के वृद्ध और पूज्य नेता दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में निर्विघ्न समाप्त हुआ। उस कांग्रेस में मिस्टर नौरोजी ने इस बात की आवश्यकता प्रकट की थी कि देश के मुख्य मुख्य भागों में कुछ लोग भ्रमण करके सर्व साधारण में राजनैतिक जागृति उत्पन्न करें। कलकत्ता कांग्रेस के समाप्त होते ही मिस्टर गोखले ने इस कार्य का बीड़ा उठाया और उन्होंने उत्तर भारत में भ्रमण किया। इस भ्रमण में मिस्टर गोखले ने प्रयाग, आगरा, लाहौर, अमृतसर, जालन्धर आदि स्थानों में अनेक व्याख्यान दिये थे। जिनमें से मुख्यतः चार विषय थे "राजनैतिक परिस्थिति"–"स्वदेशी"–"हिन्दू मुसलमान" और "विद्यार्थियों के कर्त्तव्य"। इस भ्रमण में जहां कहीं मिस्टर गोखले गये थे, वहां उनका स्वागत बड़ी धूम धाम से हुआ था। उन्होंने स्थान स्थान पर हिन्दू मुसलमानों के पारस्परिक मेल से रहने की सलाह दी थी और कहा था कि देश की भलाई बुराई में हिन्दू मुसलमान दोनों का समान स्वार्थ है।

सन् १६०७ में पंजाब की बड़ी भयङ्कर परिस्थिति थी, ज़मीन पर कर बढ़ाने से वहां की जाट जातिमें बड़ी खलबली मचरही थी; "पगड़ी सम्हालो ओ जट्टा" आदि ज़ोशीले गीत वहां घर घरमें गाये जा रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रावल पिण्डी के कुछ नेताओं पर राजद्रोह का मुक़दमा चला। लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह देश

निर्वासित किये गये। इस पर मिस्टर गोखले ने बम्बई के एङ्गलो इण्डियन अख़बार "टाइम्स आफ़ इंडिया" में एक लेख लिखा था जिसमें लाला लाजपतराय को बिना किसी अभियोग के देश निकाला करने लिये सरकार के कार्य की कड़ी आलोचना की थी। जितने दिन सरकार ने लाला लाजपतराय को माण्डले में रक्खा था उतने बीच में कौंसिल के जो अधिवेशन हुए थे उन्हीं में लाला लाजपतराय के सम्बन्ध में प्रश्न किये थे। पंजाबियों का गोखले ने कौंसिल में अच्छा पक्ष लिया था। इसी साल बम्बई की म्युनिस्पलटी की अध्यक्षता से कुछ एङ्गलो इंडियनों ने सर फ़िरोजशाह मेहता को हटाने की चेष्टा की थी उसके प्रतिवाद में बम्बई के माधोवाग़ में ७ वीं एप्रिल सन् १९०७ को एक सभा हुई थी उसके सभापति मिस्टर गोखले थे। मिस्टर गोखले की बड़ी प्रभावशालिनी वक्तृता हुई थी बम्बई के एङ्गलो इण्डियन अख़बार "टाइम्स" के जिस अंक में सरफिरोज़शाह मेहता के ऊपर आक्षेप किये गये थे उस अंक को लोगों ने सभास्थल में फाड़ कर फेंक दिया था।

कौन्सिल में सुधार

सन् १९०८ में गोखले पुनः विलायत गये, यदि कहा जाय कि सन् १९१० से कौंसिल का जो नवीन संगठन हुआ है, वह मिस्टर गोखले के प्रयत्न का फल है तो अत्युक्ति न होगी। जब सन् १९०८ में गोखले महोदय गये थे, तब उन्होंने कौंसिलों के सुधार के सम्बन्ध में लार्ड मोर्लें से कई बार भेंट की

थी। और यहां तक सुना जाता है कि लार्ड मोर्ले ने उनको रिफ़ार्म स्कीम का ड्राफ्ट (मसविदा) तक दिखला दिया था। उन्होंने इस स्कीम के सम्बन्ध में लार्ड मोर्ले को उचित सम्मति दी थी। उनकी मृत्यु के पश्चात् "इङ्गलिशमैन" जैसे कट्टर एङ्गलो इन्डियन अख़बार तक को मुक्त कंठ से यह कहना पड़ा है कि कौन्सिल के सुधारों पर गोखले के मत की छाप है" सन् १९०८ की मदरास काँग्रेस में मिस्टर गोखले ने इस स्कीम के सम्बन्ध में एक प्रभावशाली वक्तृता की थी।

दक्षिण अफ्रीका की यात्रा

दक्षिण-अफ्रीका में प्रवासी भारत सन्तानों को कैसी कैसी यन्त्रणाएं मिल रही हैं। वहां बेचारे हिन्दुस्थानियों को मनुष्योचित अधिकार भी प्राप्त नहीं है। मिस्टर गोखले का ध्यान, दक्षिण अफ्रिका में भारतवासियों पर जो अत्याचार हो रहा था, उस ओर गया था उन्होंने ४ मार्च सन् १९१२ को बड़े लाट की कौंसिल में एक प्रस्ताव उपस्थित किया था कि शर्तबंधे हुये मज़दूर वहां पर न भेजे जांय। पर कुछ परिणाम नही हुआ। अन्त में वहां की परिस्थिति से परिचित होने के लिये मिस्टर गोखले ने दक्षिण-अफ्रिका की यात्रा की। पहले जब वे इङ्गलेण्ड से चलने लगे तो दक्षिण-अफ्रिका को जाने-वाले जहाज़ ने पहले दर्जे का टिकट देना स्वीकार नहीं किया। परन्तु वहां पहुंचते ही यूनीयन सरकार ने बड़ा भारी आदर किया था। वहां वे दक्षिण-अफ्रिका की सरकार के मेहमान रहे थे। वहां की सरकार ने उनका बड़े ठाठ बाट से स्वागत किया था। और प्रवासी भारत सन्तान भी अपने नेता के

दर्शनों से प्रफुल्लित हुए। उन्होंने मिस्टर गोखले को कितनेही अभिनन्दन पत्र समर्पित किये थे परन्तु वहां के गोरे अफ़सरों और सरकार से मिलकर वे भी इस झगड़े को शान्त नहीं कर सके। मिस्टर गोखले के आन्तरिक अभिप्राय को बिना समझे हुए ही अनेक भारतवासियों ने उन पर आक्षेप करने आरम्भ कर दिये थे। यहां तक सरफ़िरोज़शाह मेहता और बाबूसुरेन्द्र नाथ बनर्जी का "बङ्गाली" अख़बार भी उन से प्रसन्न नहीं हुए। वहां से लौट कर मिस्टर गोखले ने १४ दिसम्बर सन् १९१२ को बम्बई के टाऊन हाल में और फिर *बांकीपुर की कांग्रेस में अपने व्याख्यानों में लोगों का भ्रम दूर किया।

इसके कुछ दिन पीछे दक्षिण अफ़्रिका में वहां की सरकार और निवासियों के घृणित भावों से उकताकर भारत वासियों ने निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) अर्थात् यूनियन सरकार ने प्रवासी भारत वासियों को रोकने के लिये जो अनुचित कानून, नियमादि बनाये थे, उसका क्रियात्मक रूप से प्रतिवाद करना आरम्भ किया था, जिसके कारण कर्मवीर महात्मा गांधी तथा उनके साथियों को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे। इस आन्दोलन में प्रवासी भारतसन्तानों को धन की विशेष आवश्यकता आन पड़ी। उनके बाल बच्चे तक भूखों मरने लगे मिस्टर गोखले ने वहां के निवासियों की सहायतार्थ लाखों रुपये चन्दा किया। मिस्टर गोखले अपने कर्त्तव्य को कितना पहचानते थे कि दिल्ली के सेन्ट स्टीफ़िन्स

*बांकीपुर में–मि० गोखले की वक्तृता के पश्चात् माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी की हिन्दी भाषा में "दक्षिण अफ़्रिका में प्रवासी भारतवासियों की परिस्थिति" पर बड़ी ओजस्विनी वक्तृता हुई थी।

कालेज के विद्यार्थियों ने प्रवासी भारत सन्तानों की सहायतार्थ कुछ चन्दा इकट्ठा किया था और मिस्टर गोखले को अपने यहां निमन्त्रित किया था उस समय वे ज्वर से पीडित थे, पर इसकी कुछ चिन्ता न करके थोडी देर के लिये कालेज में पहुंच ही गये। उस पीड़ितावस्था में ही मिस्टर गोखले ने और भी कई स्थानों में वहांवालों की सहायतार्थ भ्रमण किया था। उनका यह परिश्रम सफल भीं हुआ। जहां उनके देशवासियों ने उनके अनुरोध पर अपने भाइयों की सहायतार्थ अपनी थैलियों का मुंह खोल दिया था, वहां हमारे प्रजाप्रिय लार्ड हार्डिञ्ज की कृपा से दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारत सन्तानों के कुछ कष्ट दूर हो गये हैं।

पबलिक सरविस-कमीशन

भारतवर्ष का शिक्षित सम्प्रदाय बहुत दिनों से यह आन्दोलन कर रहा है कि भारतवासियों को सरकार के यहां बड़ी बड़ी नौकरियां बहुत कम मिलती हैं सिविल सरविस आदि की परीक्षाएं विलायत में होने के कारण भारतवासियों को सुविधा नहीं है इसकी जांच के लिये सन् १९१२ में पबलिक सरविस कमीशन बैठा। उसके एक सदस्य मिस्टर गोखले भी हुये। सदस्य होने पर गोखले चाहते तो १५०००) पन्द्रह हज़ार रुपया वार्षिक इस कमीशन से ले सकते थे, पर ऐसा करने से उन्हें कौंसिल की मेम्बरी छोड़नी पड़ती। इससे कौंसिल में भारत के प्रजामत की बड़ी हानि होती, अतएव उन्होंने इस विचार से वह बड़ी आय स्वीकार नहीं, की। अस्वस्थ रहने पर भी वे कमीशन की बैठकों में सम्मिलित

हुआ करते थे और अत्यन्त परिश्रम पूर्वक उसका कार्य किया करते थे। डाक्टरों ने कई बार उनसे कमीशन में सम्मिलित न होने के लिये कहा था पर देश की चिन्ता के सामने उन्हें अपने स्वास्थ्य तक की परवाह नहीं रही थी। बीच बीच में दो एक बार के लिये डाक्टरों के अनुरोध से उन्होंने कमीशन का काम छोड़ भी दिया था परन्तु स्वास्थ्य के तनिक अच्छे हो जाने पर ही वे उसमें सम्मिलित हो जाते थे।

इस कमीशन के सम्बन्ध में उन्हें दो बार विलायत जाना पड़ता था इस एप्रिल मास में भी वे विलायत जाते परन्तु कराल काल ने उनको पहिले ही घेर लिया। जिस से इस कमीशन के सम्बन्ध में उनके हृदय की लालसाएं, उनके हृदय में ही समा गईं। अब इस कमीशन में प्रजामत का पक्ष लेने वाला, मिस्टर गोखले के सिवाय दूसरा कोई नहीं है। कमीशन के कार्य्यों में गोखले महोदय को कठिन परिश्रम करना पड़ता था इस विषय में उन्होंने "अमृत बाज़ार—पत्रिका" के सम्पादक से स्वयं कहा थाः—"मुझे बड़ी कठिन लड़ाई लड़नी पड़ती है वे कई हैं, मैं अकेला हूं विशेष परिश्रम करने के कारण मेरा स्वास्थ्य ख़राब हो गया है और मैं अपने को मृत्यु का शिकार बना रहा हूं। परन्तु तिसपर भी मुझे अपनी चिन्ता नहीं, देश की चिन्ता है"। इसमें सन्देह नहीं कि यदि गोखले पबलिक सरविस कमीशन की रिपोर्ट के प्रकाशित होते समय जीवित रहते तो देशवासियों को बहुत नई बातों का पता लगता। मालूम नहीं, वे अपनी रिपोर्ट भी छोड़ गये हैं या नहीं।

शिक्षा सम्बन्धी उद्योग

अब तक पाठकों ने हमारे चरित्र-नायक को राजनैतिक संसार में देखा है अब हम उनके कुछ शिक्षा और सामाजिक सुधार सम्बन्धी विचारों का भी परिचय देना चाहते हैं। मिस्टर गोखले ऋषि कल्प रानाडे के शिष्य थे, रानाडे महोदय का विचार था कि देश की उन्नति केवल एक विषय पर ही निर्भर नहीं रहती है। समस्त विषयों को सुधारने और उन्नत करने की आवश्यकता हुआ करती है। गोखले महोदय के भी ऐसे ही विचार थे, परन्तु उन्हें राजनैतिक कार्य्यों में विशेष योग देना पडता था पर साथ यह बात नहीं थी कि वे देश सम्बन्धी अन्य विषयों के विरोधी हों। शिक्षा का कार्य्य तो बहुत अधिक किया था। पूना के फरग्यूसन कालेज के प्रोफेसर होने और शिक्षा का एक आदर्श उपस्थित करने के अतिरिक्त उन्होंने समय समय पर शिक्षा सम्बन्धी अपने बड़े गहन और गम्भीर विचार प्रकट किये थे। बम्बईके ग्रेज्यूएट्स एसोसियेशन के वार्षिक अधिवेशन में उन्हों ने ११ वीं एप्रिल सन् १८९६ को एक व्याख्यान दिया था। जिसमें उन्होंने वर्त्तमान शिक्षापद्धति के अनेक दोषों को दूर करने के लिये बल दिया था। इस व्याख्यान में उन्होंने वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों को निर्भय होकर प्रकट किया था। जिस तरह से आज कल विद्यार्थी गण रट रट कर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं, इसपर उन्होंने अत्यन्त खेद प्रकट किया था। इसके अतिरिक्त उन्हों ने लण्डन के ईस्टइण्डियन एसोसियेशन में जो "स्वराज्य" पर निबन्ध पढ़ा था उसमें शिक्षा के सम्बन्ध में उन्हों ने अपने यह विचार प्रकट किये थे:—"सर्वसाधारण

की शिक्षा भी इतनी तेज़ीं के साथ दी जानी चाहिये कि आज की तारीख़ से बीस वर्ष के भीतर अगर जल्दी न हो सके तो लड़कों और लड़कियों को मुफ़्त और ज़बरदस्सी शिक्षा देने का प्रबन्ध हो जावे "।

समय समय पर मिस्टर गोखले सर्व साधारण में शिक्षा सम्बन्धी अपने विचार प्रकट करके ही चुप नहीं हुए थे। उन्होंने बड़े लाट की कौंसिल में प्राथमिक शिक्षा का जो बिल उपस्थित किया था उसकी बात हम पहिले कह चुके हैं। उस प्रस्ताव के समर्थन में भारतवर्ष के बहुत से स्थानों में सभाएं हुईं थीं। स्वयं मिस्टर गोखले ने अनेक स्थानों में अपने प्रस्ताव के सम्बन्ध में वक्तृता दी थी सारा देश मिस्टर गोखले के इस बिल के पक्ष में था। जब दूसरे वर्ष उन्हों ने बिल उपस्थित किया और जब कुछ सरकारी और कुछ चटुकारिता प्रिय मेम्बरों ने इसका विरोध किया था तब मिस्टर गोखले ने कौंसिल में बड़ी युक्ति युक्त पूर्ण और ओजस्विनी वक्तृता दी थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में बिल के उन विरोधियों को जिनका कथन यह था कि ज़बरदस्ती शिक्षा देने से अशान्ति फैलेगी एक स्थल पर कहाः—

"इस अवस्था में हम लोगों का कर्त्तव्य क्या होने चाहिये वस्तुतः समस्त सभ्य जगत ने इस जटिल प्रश्न की मीमांसा ज़बरदस्ती शिक्षा देकर हीकी है और करने का प्रयत्न किया है। क्या हम लोग ही ऐसे मार्ग पर डटे रहेंगे जिससे मूर्खता बराबर बनी रहेगी। उदाहरण के लिये फ़िलिपाइन्स टापू सीलोन और बड़ोदा राज्य काफ़ी है। केवल यह कह देने से काम नहीं चलेगा कि इनकी अवस्था ब्रिटिश भारत से भिन्न

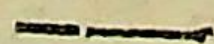
प्रकार की है। सच बात तो यह है कि दो उदारण एक दम एक सरीखे हो ही नहीं सकते। सीलोन के अधिवासी और दक्षिण भारत के अधिवासी तथा बड़ौदा राज्य के अधिवासी और वृटिश गुजरात के अधिवासी में भेद ही क्या है इसके आगे मिस्टर गोखले ने अपनी वक्तृता में बम्बई प्रान्त के अन्तर्गत सांगली देशीय राज्य का उदाहरण दिया था जहां प्राथमिक शिक्षा ज़बरदस्ती से दी जाती है एक स्थान पर उन्होंने अपनी इस वक्तृता में कहा था कि जो लोग सार्वजनिक शिक्षा से ब्रिटिश शासन के नाश की शङ्का करते हैं, उनका भय निष्कारण है राज्य को भय मूर्ख लोगों से ही है न कि जानकारों से..... ....जो लोग यह कहते हैं कि भारत में आज ऐसा कानून नहीं बनाया जा सकता है वे भूलते हैं।........................सीलोन, बड़ौदा और सांगली के उदाहरणोंसे सिद्ध हो गया है कि लोगों का यह कथन निस्सार है, जो लोग यह कहते हैं कि जब तक पढ़ने योग्य उम्र के अधिकांश लड़के पढ़ने न लग जांय तब तक ज़बरदस्ती न कीजाय वे अन्यदेशका उदाहरण नहीं देखते। जिस समय ज़बरदस्ती शिक्षा आरम्भ की गयी उस समय इङ्गलेण्ड में सैकड़ा पीछे ४३ और जापानमें सैकड़ा पीछे २८ लड़केही पढ़ते थे। जो लोग शिक्षा की दुहाई देकर कहते हैं कि ज़बरदस्तीसे शिक्षा थोड़ी काम की दीजायगी इसलिये वह अनावश्यक है। यहां इस समय उक्त शिक्षा से सुयोग्य शिक्षकों और सुनिर्वाचित पाठ्य पुस्तकों की ही आवश्यकता है, उनसे मैं कहूंगा कि असल उद्देश्य सम्पूर्ण अज्ञान का नाश करना है। इसके लिये तीन रुपये वेतन के शिक्षक और भाड़े के अथवा लोगों के प्रदत्त

घर भी यथेष्ठ हैं। ये विपत्तियां इङ्गलैंड और रशिया में भी प्रारम्भ में थी और आज भी हैं। ज़बरदस्ती होजाने के पीछे ये सुधार अवश्य होते रहेंगे, पर इन सुधारों के होजाने तक ज़बरदस्ती करना—बुद्धिमत्ता नहीं है। ....आज कल प्रत्येक बालकको प्राथमिक शिक्षा के लिये प्रतिवर्ष फ़ी बालक चार रुपये लगते हैं सरकार जो उन्नति करना चाहती है, उसके होजाने पर भी डाइरेक्टर जनरल मि० आरेञ्ज के हिसाब से ही प्रत्येक्त बालक पर प्रति वर्ष पांच रुपये लगेंगे आज हिन्दुस्तान में ६ से १० वर्ष तक की उम्र के सवा करोड़ लड़के हैं इनमें ४० लाख आज शिक्षा पा रहे हैं। अपनी इस वक्तृता में मिस्टर गोखले ने उन देशी मेम्बरों को जिन्होंने इस बिलके विपक्ष में सम्मति दी थी, उनको खूब फटकार बतलायी थी।

समाज सुधार सम्बन्धी विचार

बहुत से लोगों का विचार है कि मिस्टर गोखले समाज सुधारक नहीं थे अथवा समाज सुधार सम्बन्धी बातों से दूर रहते थे हमारी समझ से ऐसा कहने वाले भूलते हैं, इस में सन्देह नहीं कि मिस्टर गोखले समाज सुधार सम्बन्धी कामों में बहुत कम योग देते थे परन्तु इसका कारण यह था कि वे देशके राजनीतिक कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि उनके दूसरे कार्यों में योग देने का बहुत कम समय मिलता था, परन्तु यह नहीं है कि वे समाज-सुधारक न होकर कार्य करने वाले थे। अपनी लड़कियों का बड़ी अवस्था तक विवाह

न करना और उनको शिक्षा देना, उनके समाज सुधारक होने का पक्का सबूत है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सन् १८९७ में एक सभा में "भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा" शीर्षक एक निबन्ध पढ़ा था उसमें उन्होंने भारतवर्ष में स्त्री-शिक्षा के प्रचार न होने और लड़कियों का छोटी उम्र में विवाह करदेने पर खेद प्रकट किया है। उनकी और भी कई वक्तृताओंसे पता लगता है कि वे भारतवर्ष की स्त्रियों को तथा उन बेचारों को जिनको हम अछूत जातियां कहकर घृणा करते हैं विद्यादान देने के बड़े पक्षपाती थे। सन् १९०३ की २७वीं अप्रैल को उन्होंने बम्बई की प्रान्तिक समाज सुधारिणी सभाका जो अधिवेशन धूलिया में हुआ था उसमें अछूत जातियों के उठाने के सम्बन्ध में वक्तृता दी थी उसमें उन्होंने अछूत जातियां की वर्त्तमान दशा पर अत्यन्त दुःख प्रकट किया था। इस वक्तृताको पढ़ते ही ज्ञात होजाता है कि मिस्टर गोखले के हृदय में अत्यन्त जातियों के प्रति कितनी सहानुभूति थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा था:—"हम कुत्ते बिल्ली आदि चाहे जिस जानवर को छू सकते हैं इसमें कुछ पाप नहीं है पर अछूत जातियां से छूजाना पाप है" गोखले महोदय ने अपनी इस वक्तृता में यही दर्शाया था कि अछूत जातियों को उठाये बिना कभी राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता है।



रोग और मृत्यु

"दुःख से आखें हैं भरी आती
कहते छाती है फाटी जाती" ॥

क्या कहें कुछ कहने की हिम्मत न होने पर भी कहे बिना नहीं रहा जाता है। यह हम पहिले ही कह चुके हैं कि पब्लिक सरविस कमीशन में कार्य करते समय ही मिस्टर गोखले बीमार होगये थे। उस बीमारी की अवस्था में भी वे अपना कर्त्तव्य पालन करते रहे थे वह हमारे देशका दुर्भाग्य है कि यहां काम करने वाले जल्दी ही मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं इसका कारण भी यह है कि यहां देश सेवकों को आवश्यकतासे अधिक कार्य करना पड़ता है। क्योंकि इस देश में काम करने-वालों का हाथ बंटानेवाले बहुत कम हैं पर काम में बाधा डालने वाले बहुत हैं। मिस्टर गोखले की भी यही दशा हुई निरन्तर परिश्रम करने और तनिक भी विश्राम न करने से उन का स्वास्थ्य बिगड़ गया। उन्हें देश सेवा से इतना अवकाश न मिला कि वे अपना स्वास्थ्य सुधार लेते। बस अन्त आही पहुंचा, जिस बात की आशंका न थी, वही बात हुई। यद्यपि वे मधुमेह रोग से १५ वर्ष से बीमार थे परन्तु दो वर्ष की लगातार बीमारी से उनके जीवन प्रदीप का तैल शनैः शनैः कम हो रहा था, वे बीमारी के कारण ही इस बर्ष इण्डियन नेशनल कांग्रेस में नहीं गये थे। मृत्युके पांच दिन पहिले उन्हें श्वासको बीमारी होगयी थी। गत १३ वीं फ़रवरी १९१५ को महात्मा गान्धी पूना गये थे। गोखले ने उनके स्वागत के लिये उद्यान भोज दिया था। परन्तु उसी दिन गोखले महोदय की तबि-

यत खराब होगयी थी सो शीघ्र चले आये। इसके बाद उनकी तबियत कुछ अच्छी भी होगयी थी २१ फरवरी को बड़ेलाट की कौन्सिल में वे दिल्ली जानेवाले थे। परन्तु फिर रोग बढ़ गया और इसके कारण वे नहीं जा सके। १८ वीं तारीख को अर्थात् मृत्युके एक दीन पहिले उनकी दशा भयङ्कर होगयी थी शुक्रवार १६ वीं फरवरी को डाक्टरों को मृत्यु के लक्षण प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगे, मिस्टर गोखले ने अपनी मृत्यु का अन्तिम समय निकट जान कर अपने परिवार के सब लोगोंको बुलाया और कुछ परामर्श दिया। भारतसेवक समिति के सदस्यों से उन्होंने उस काम को चलाने के लिये अनुरोध किया और कहाः—"मेरी कोई जीवनी न छापी जाय"। मृत्यु का समय निकट जानकर वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और कहने लगे कि अब दूसरा दुनियाँको भी देखना चाहिये। अन्तिम समय गोखले को केवल पबलिक सरविस कमीशन के काम को पूरा न करने का दुख रहा। भारतसेवक समितिका उन्होंने अपनी ओरसे कोई सभापति नहीं चुना और उसका निर्वाचन सेवक समिति के सदस्यों पर ही छोड़ा।

१६ वीं फरवरी को रात्रि के दस बजके पच्चीस मिनट पर उन का जीवन प्रदीप बुझ गया। शोक है भारत गगन मण्डल से राजनैतिक सूर्य अस्त हो गया, समस्त भारत वर्ष में कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक और पेशावर से कलकत्ते तक सारा देश शोक से छागया। वृद्धा भारत-माता अपने लालके लिये रोती, तड़फती, बिलखती रह गई, दुष्टा मृत्यु ने उस पर तनिक दया नहीं की। निर्दय काल ने उसके रोने बिलखने पर कुछ ध्यान नहीं दिया

भारत का नेता, नव्य भारतका शिक्षक, प्रजा और राजा का शुभ चिन्तक उठ गया। सारे देश में एक छोर से दूसरे छोर तक शोक और दुःख की कालिमा छागई पूना का तो कहना ही क्या था, इस शोक समाचार को सुनते ही अगणित नर नारी भारत सेवक समिति के सामने अपने नेता के अन्तिम दर्शन करने के लिये एकत्रित होगये। लगभग बीस हजार आदमियों की भीड़ जुड़ गई। गोखले से राजनैतिक विषयों में सदैव से महात्मा तिलक का मत भेद रहा था। परन्तु इस अवसर पर वे अपने समस्त मतभेद को भूलकर सिंह गढ़ से मोटर में आये, हिज़हाईनेस आगा खां ने गोखले की रथी पर फूल चढ़ाने के लिये भेजे।

प्रातः काल दस बजे पर गोखले के शव का श्मशान भूमि को लेजाने का विचार था पर भीड़ इतनी हुई कि डेढ़ बज गया। श्मशान भूमि तक पहुंचने में दो घण्टे लगे। मि० देव धर और डाक्टर भण्डारकर ने उपस्थित जन मंडली में गोखले की देश सेवा के सम्बन्ध में कुछ कहा, तत्पश्चात् उपस्थित जन मण्डली के अनुरोध से लोकमान्य तिलक भी इस शोकप्रद प्रसङ्ग पर कुछ कहने को खड़े हुए, तालियों की गड़ गड़ाहट से उनका स्वागत किया गया इस पर मराठी भाषामें महात्मा तिलक ने वक्तृता की थी। जोआगे प्रकाशित है:-

तिलक की वक्तृता

तालियों के बजाने पर महात्मा तिलक ने शोक प्रकट करते हुये कहा—यह समय तालियां पीटने का नहीं, रोने का है। गोखले की मृत्यु से वृद्धा भारत माता की जो अकथनीय

हानि हुई है, उस पर यह रोने का अवसर है क्या तुम देखते नहीं हो, भारत के हीरा महाराष्ट्र के रत्न, प्रमुख कार्य कर्त्ता वीर गोखले आज इसमृत्यु शय्या पर घोर विश्राम कर रहे हैं। आंखें खोल कर उनकी ओर देखो और उनसे कर्तव्य करना सीखो। गोखले अपना कर्तव्य उत्तम रीति से करके यहां से चले गये। क्या उनके स्थान पर तुम में से कोई आवेगा? विजयी वीर की भांति गोखले अपने नाम को चिरस्थाई करके जा रहे हैं। योग्य रीति से अपनी जन्म भूमि के प्रति कर्त्तव्य पालन करने का जैसा उत्तर ये परलोक में देंगे, वैसा उत्तर तुम लोग तो क्या भारतमाता का कोई भी पुत्र न देसकेगा। प्रमाणिक रीति से अपना सच्चा कर्त्तव्य पालन करने का उत्तर ऐसी उत्तमता से ईश्वर को देने का सौभाग्य अब तक बहुतही थोड़े पुरुषों को प्राप्त हुआ है गोखले को मैं बिलकुल बचपन से जानता हूं। वे साधारण आदमी थे। वे न कोई मालगुज़ार थे, न रियासतदार और न मालदार ही थे बल्कि हमारे तुम्हारे जैसेही थे। वे अपने बुद्धि, बल और कर्त्तव्य के सामर्थ्य से ही इस पद पर पहुंचे थे। यद्यपि आज गोपाल राव चले गये, हम से बिछूड़ गये। पर वे पीछे ऐसी कितनी ही बातें छोड़ गये हैं जिनसे तुम शिक्षा ग्रहण कर सकोगे। इन बातों पर ध्यान देकर तुम में से प्रत्येक को प्रयत्न करते रहना चाहिये जिससे गोखले की कमी पूरी हो और इस प्रकार तुम्हारे प्रयत्न करते रहने से ही स्वर्ग में गोखले को आनन्द होगा। कर्त्तव्य वश महात्मा गोखले और महात्मा तिलक में प्रतिद्वन्दता रही ही यह बात जुदी है। परन्तु गुणी लोग सदैव गुणी का आदर करते रहते हैं। बिछुड़न समय

बड़ा प्रभावोत्पादक होता है उस समय सारा मत भेद सारे सिद्धान्तों का झगड़ा सारी प्रतिद्वन्दता मिट जाती है। यह बात सदैव से चली आ रही है वीर चूड़ामणि कर्ण सदैव महात्मा भीष्म पितामह का विरोध करते रहे परन्तु महाभारत के युद्ध में भीष्मपितामह के पतन होते ही कर्ण अपने समस्त विरोध भाव को भूल गये। भीष्म पितामह कौरवों की ओर से युद्ध कर रहे थे पर पाण्डव उनकी मृत्यु पर खूब रोये थे। अतएव जिन लोगों का गोखले से मतभेद था, वेभी आज अपने समस्त मतभेद को भूलकर गोखले की मृत्यु पर रो रहे हैं मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए उनका गुण गानकर रहे हैं मतभेद होनेपर किसी के गुणों का भुला देना ठीक नहीं है। गोखले की मृत्यु पर इसा उच्च और उदार उदाहरण का परिचय लोकमान्य तिलक जी ने दिया है। क्या हमारे जन साधारण लोकमान्य तिलक महोदय के इस उदाहरण के अनुकरण करने की चेष्टा करेंगे।

साम्राज्य में शोक

हम पहले कह आये हैं कि महात्मा गोखले की अकाल मृत्यु से इस समय समस्त देश शोक ग्रस्त हो रहा है। भारतवर्ष में ही नहीं समस्त ब्रिटिश सम्राज्य में जहां कभी सूर्य्य अस्त नहीं होता है, शोक फैल रहा है। कितने ही स्थानों में गोखले की मृत्यु के कारण स्कूल, कालेज बन्द हुए। अदालतें बन्द हुई। मृत्यु समाचार पाते ही हाईकोर्ट की छुट्टी कर दी गई। लार्ड हार्डिञ्ज महोदय ने बड़ी व्यवस्थापक सभा (लेजि-

स्लेटिव कौन्सिल) का अधिवेशन स्थगित कर दिया । था कलकत्ते में गवर्नमेण्ट हाऊस का !आधा झण्डा शोक के कारण गिरा दिया गया बड़े लाट महोदय ने अपनी कौन्सिल का अधिवेशन स्थगित करते समय, महात्मा गोखले के सम्बन्ध में अनेक बातें कहीं थीं बड़े लाट महोदय ने खेद प्रकट करते हुए कहा था—"माननीय मिस्टर गोखले की आकस्मिक मृत्यु को सुनकर मुझे अत्यन्त दुखः हुआ, उन्होंने सच्चाई चमत्कारिणी योग्यता और विचित्र वक्तृत्वशक्ति से हिन्दुस्तानियों में एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था।......... वे राज भक्त थे परन्तु सरकारी कामों की निडर होकर आलोचना करते थे और उन के विरोधियों का उनके सामने ठहरना मुशिकल हो जाता था । दक्षिण अफ़रीका के जटिल प्रश्न की मीमांसा उन्हीं की राजनीतिज्ञता और बुद्धिमत्ता से हुई थी। मैं उन्हें केवल काउन्सिल का एक योग्य सभासद ही नहीं समझता था किन्तु उन्हें अपना मित्र समझता था"।

बड़े लाट महोदय के उपर्युक्त शब्दों से ज्ञात होता है कि मिस्टर गोखले साम्राज्य के बड़े शुभचिन्तक थे।—बाबू सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कलकत्ते की शोक सभा में मिस्टर गोखले को राजनैतिक ऋषि कहा था। बम्बई के गवर्नर महोदय ने पूना और बम्बई की शोक सभाओं में सभापति का आसन ग्रहण किया था। हमारे संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट रूरजेम्स मेस्टन ने लखनऊ में शोक प्रकट करते हुये अपनी वक्तृता में कहा था:—'जब मैं संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट के पद को ग्रहण करने के लिये आ रहा था उसी बीच में मिस्टर गोखले की कलकत्ते में भेट हुई थी। तब उन्होंने मुझ से कहा था:—

"मैं कुछ दिन के लिये आपके शासन काल में आऊंगा, और आप के साथ ठहरूंगा तब बतलाऊंगा कि आप का शासन कैसा होता है? उस समय से मैं ने उन्हें कितनी ही बार लिखा पर वे स्वस्थ न होने तथा दूसरे कार्य्यों में व्यस्त रहने के कारण न आसके"। क्या सर जेम्स मेस्टन के उपर्युक्त वाक्यों से यह ध्वनि नहीं निकलती है कि वे सभी प्रान्तों की कैसी चिन्ता किया करते थे और वास्तव में गोखले महोदय को भारतवर्ष के सभी प्रान्त अपना नेता और शुभचिन्तक समझते थे, जब १९०९ में बिहारप्रान्त की प्रान्तिक कानफरेंस का भागलपुर में अधिवेशन हुआ था, उस समय बिहारियों को डर था कि कहीं मिन्टो--मौर्ले के कौंसिल के सुधार के कारण हिन्दू, मुसलमानों का झगड़ा प्रान्तिक कान्फरेंस में न हो जावे बस इस विचारवश बिहारियों ने मिस्टर गोखले को कान्फरेंस में निमन्त्रण दिया और गोखले महोदय भागलपुर पहुंचे, उन के जाने से बिहारप्रान्त की, प्रान्तिक कान्फरेंस सफलतापूर्वक समाप्त हुई। कहने का तात्पर्य यह है कि मिस्टर गोखले किसी ख़ास प्रान्त के नहीं थे, सभी प्रान्तों के थे। हिन्दू मुसलमान दोनों को समान भाव से देखते थे, जिस समय प्रयाग में सन् १९१० में हिन्दू मुसलमानों के मेल के लिये एक कान्फरेंस हुई थी, उस समय उन्होंने कहा था कि मैं न हिन्दू हूं न मुसलमान इसलिये मैं इस कान्फरेन्स में शामिल नहीं हो सकता।" क्या हिन्दू और मुसलमान आपस के झगड़ों को छोड़कर प्रीतिपूर्वक चलेंगे, जिससे महात्मा गोखले की आत्मा को स्वर्ग में शान्ति प्राप्त हो।

भारत के पूज्य, वृद्ध दादाभाई नौरोजी को महात्मा

गोखले की मृत्यु से अत्यन्त शोक हुआ है. उन्होंने गोखले की मृत्यु पर यह सन्देश अपने देश वासियों के प्रति प्रकट किया है:--"मुझे अपने एक मित्र से यह सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ कि गोखले की मृत्यु होगई । हाय ! भारतवर्ष पर कैसी विपत्ति आई है ? देश की बड़ी हानि हुई है । इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता । मेरी सब आशाओं पर गोखले की मृत्यु के साथ ही पानी फिर गया । पर मुझे कुछ थोड़ा सा सन्तोष यह है कि गोखले की वियोग वेदना को सारा देश अनुभव कर रहा है । समस्त देश गोखले जो कुछ कार्य करना चाहते थे, उसको जानता है और उसकी प्रशंसा कर रहा है । दूसरे देशभक्त नवयुवक गोखले के उदाहरण का अनुकरण करेंगे और जो कुछ गोखले करना चाहता था, उसकी पूर्त्ति करेंगे । तिस पर भी मैं यह शोक प्रकट किये बना नहीं रह सकता कि यदि गोखले की मामूली उम्र सत्तर वर्ष की भी होती तो वह जो कुछ कार्य करना चाहता था, पूरा कर जाता ।" क्या बूढ़े दादाभाई नौरोजी की आशाएं इस देश के नवयुवक पूर्ण नहीं कर सकते हैं ?

वस्तुतः गोखले की मृत्यु से जैसा शोक इस देश में हुआ है, वैसी पहले कभी देखने में नहीं आया । बम्बई में जो शोक सभा हुई थी उसमें इतनी भीड़ थी कि एक दूसरी सभा उसी समय करनी पड़ी थी । सभी जानते हैं कि सर फिरोज-शाह मेहता बड़े अच्छे वक्ता हैं, परन्तु गोखले की मृत्यु के कारण वे इतने दुखित हुए कि शोक सभा में बहुत देर तक नहीं बोल सके, दादाभाई नौरोजी के समान यह निराशा अपनी वक्तृता में प्रकट की कि इस वर्ष मैंने देश के लिये जो कुछ

कार्य सोचे थे, न मालूम गोखले की सहायता विना कैसे पूर्ण होंगे" प्रयाग में २८ वीं फरवरी को जब गोखले की अस्थियां गङ्गा में विसर्जन की गई थी तब पन्द्रह, बीस हज़ार आदमी की भीड़ थी, और सभी शोक से व्याकुल हो रहे थे, लोग रोते थे छाती पीटते थे। भारतवर्ष में ही नहीं, गोखले की मृत्यु के कारण दक्षिण अफ़रीका, इङ्गलैण्ड वग़ैरह में भी अनेक शोक सभाएं हुईं। दक्षिण अफ़्रीका में जनरल स्मिट्स ने भी शोक प्रकट किया, इङ्गलैंड में पार्लीमेंट के कितने ही मेम्बरों ने और बड़े बड़े प्रतिष्ठित अङ्गरेज़ों ने शोक प्रकट किया। स्वयं सम्राट जार्ज और सामाज्ञी मेरी ने बड़े लाट की मार्फ़त गोखले के परिवार को लोगों सूचक जनक और सहानुभूति का तार भेजा था।

सच्चा स्मारक और शिक्षा

गोखले की मृत्यु पर शोक प्रकाश करने के लिये स्थान स्थान पर शोक सभाएं होरही हैं और सभी सभाओं में अनेक प्रकार से उनके स्मारक स्थापित करने की चर्चा होरही हैं। सच पूछिये तो ऐसे महापुरुष के जितने स्मारक स्थापित किये जांय, जिस ढङ्गके बनाये जाँय सभी थोड़े हैं। परन्तु देखना चाहिये कि सच्चा स्मारक महात्मा गोखले का क्या हो सकता है ? यदि मुझ से कोई पूछे तो मैं कहूंगा कि गोखले का सब से पहले और सच्चा स्मारक, उनकी स्थापित की हुई "भारत सेवक--समिति" है। महात्मा गोखले ने भी मृत्यु शय्या पर पड़े हुए यही इच्छा प्रकट की थी कि मेरी कोई

जीवनी न लिखी जाय परन्तु मेरे कार्य्य को निरन्तर प्रचलित रखा जाय, बस इससे बढ़कर गोखले का और क्या स्मारक हो सकता है।

"भारत सेवक समिति" का क्या रूप है, क्या काम है, क्या उद्देश्य हैं, इस विषय में हम पीछे लिख चुके हैं। अतएव यहां पर हम उन सब बातों को दुहराना नहीं चाहते हैं। हमारी सम्मति में वृद्ध दादा भाई नारोजी के सन्देश के अनुसार हमारे नवयुवकों को अपनी समस्त आशाओं पर लात मार कर "भारत सेवक समिति" में सम्मिलित होना चाहिये जिस महान् त्याग का उच्च आदर्श महात्मा गोखले ने हमारे सामने रक्खा है उसका अवलम्बन करना चाहिये। हमारे देश में डाक्टर, वकील, डिप्टी कलक्टर, तहसीलदार एञ्जीनियर आदि की कमी नहीं है, कमी है केवल देश भक्तों की। क्या हमारे नवयुवक--"भारत सेवक-समिति" में सम्मिलित होकर देश सेवा के लिये तैयार होने की चेष्टा नहीं करेंगे ?

केवल नवयुवकों के सम्मिलित होने से ही गोखले के सच्चे स्मारक की पूर्ति नहीं होगी। सच्चे स्मारक "भारत सेवक समिति" को चिरस्थायी करने के लिये विपुल धनकी आवश्यकता है। हमारे देश में लक्ष्मी के लालों की कमी नहीं है परन्तु वे लोग अपने धन को सन्दूकों में उसी तरहसे वन्द करके रखते हैं, जैसे कपड़ों को चूहों के कतरने के भय से रखा जाता है। यदि हमारे देश के धनी लोग देश सेवा के महत्व को समझ कर महात्मा गोखले की स्थापित "भारत सेवक समिति" का स्थायी कोष इतना करदें कि उसको अपने उठायें हुये कार्यों की पूर्ति करने के लिये कुछ अड़चन हो

तो भारतवर्ष की एक बड़ी भारी आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है। भारतमाता के सुपुत्र महात्मा गोखले का स्मारक चिरस्थायी हो सकता है। हमारे देश में दान दाताओं की भी कमी नहीं है पर जहां वे अन्य विषयों में अपना दान देते हैं, वहां उनको "भारत सेवक-समिति" की भी सहायता करना अपना परम कर्त्तव्य समझना चाहिये। इस समय समस्त भारतवासियों का कर्त्तव्य है कि वे "भारत सेवक-समिति" को इतना पुष्ट करें कि भारतवर्ष के नगर नगर में गोखलेका सच्चा स्मारक अर्थात् भारत सेवक समिति की शाखाएं स्थापित होजायं।

इसके अतिरिक्त महात्मा गोखले भारतवर्ष के जन साधारण में प्राथमिक और अनिवार्य शिक्षा का प्रचार करना चाहते थे। इस विषय में वे फलीभूत नहीं हुए। इस विषय में उनकी हार्दिक इच्छा उनके साथ ही बिलीन हो गई है। इसलिये हम भारतवासियों का परम और पवित्र कर्त्तव्य है कि गोखले महोदय के स्मारक स्वरूप प्रत्येक गांव और नगर में मुफ्त और प्रारम्भिक शिक्षा के निमित्त पाठशालाएं खोलें, जिससे सर्वसाधारण में ज्ञान की ज्योति का प्रचार हो और महात्मा गोखले की इच्छा पूर्ण हो। इससे बढ़कर और क्या स्मारक होगा? किसी महापुरुष का इससे बढ़कर और कोई स्मारक नहीं है कि उसके उद्देश्यों की पूर्त्ति की जाय, हम पहले कह आए हैं कि मिस्टर गोखले का एक उद्देश्य यह भी था कि हिन्दू, मुसलमानों में परस्पर प्रेम हो। आपस के मत-मतान्तर के झगड़े को छोड़ कर दोनों जातियों के लोग देश में सच्चे भाई के समान रहें। अपने को "भारतीय" अर्थात्

हिन्दुस्तानी समझें। वास्तव में हम लोग गोखले का सच्चा स्मारक बनाना चाहते हैं, तो हिन्दू, मुसलमान का भाव त्याग करके, आपस के व्यर्थ लड़ाई, झगड़ों को लात मार कर देश सेवा का बीड़ा उठावें। भारतमाता की सेवा का व्रत ग्रहण करें। धर्म सम्बन्धी मत भेदों पर न लड़ कर भारत माता की पूजा और आराधना ही अपना कर्त्तव्य समझें। महात्मा गोखले की जीवनी अपने देश की सेवा करने की बड़ा भारी शिक्षा देती है।

यों तो गोखले की मृत्यु पर सभी एङ्लो इण्डियन और देशी अख़बारों ने शोक प्रकट किया है पर पूना के "केसरी" अख़बार (जो लोकमान्य तिलक का पत्र है) अपना विचार पूर्ण सम्मति प्रकट की है, उसने गोखले के अनेक गुणों का उल्लेख करते हुए लिखा है:-"*कोई इनकी बुद्धिमानी की प्रशंसा करते हैं, तो कोई इनके उद्योग को सराहते हैं, कोई इनको सरलता की पूर्त्ति मानते हैं, तो कोई इनके निराभिमानी होने के गीत गाते हैं। परन्तु हमारे मन में सब ऊपरी गुण हैं। और इस सम्बन्ध की कुछ बातों में किसी किसी का मान्यवर गोखले महोदय से मत भेद हो सकता है। ये सारे गुण और कर्त्तृत्व शक्ति जिस एक आन्तरिक सद्गुण से उत्पन्न होते हैं, उस गुण के सम्बन्ध में मतभेद होना बिलकुल सम्भव नहीं। और वह गुण **"निस्वार्थ अन्तःकरण से अपने आप को, देश सेवा में अर्पित करदेना है।"** बाल्य काल

* मराठी—"केसरी" लेख का यह अंश कानपुर के "प्रताप" से उद्धृत किया गया है।

में अभ्यास और युवाकाल में संसार सुख समाप्त करके अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों के कर्तव्य शून्य होने पर लोक कल्याण के मार्ग में आनेवाले पुरुष मिले भी तो वे कुछ विशेष आदर के पात्र नहीं हैं परन्तु जब इन्द्रियां बल से भर रही हैं, शरीर में सामर्थ्य लहरें मार रहा है, वृद्धावस्था कल्पना में भी नहीं दीखती है। सामर्थ्य संसार के सुख सम्पत्ति को घसीट लाने में एक भारी से भारी उद्योगी से कम नहीं हैं संसार के आनन्द का रूप मनोहर रत्न सा दीखता हुआ चित्त की वृत्तियों को सहज ही में खींच सकता है—ऐसी अवस्था में और विशेष कर ऐसे संसार के सुख साधनों के मार्गों में से सुख और सम्पत्ति मिलने का दृढ़तर विश्वास होते हुए भी इन सब मनोहर दृश्यों पर से दृष्टि को बलपूर्वक पीछे हटा लेना और अपनी शक्ति से देश सेवा में लगजाना और उसमें आई हुई अपत्तियों के सहने में आनन्द मानना और इस भगीरथ प्रयत्न के लिये एक निष्ठा से सतत परिश्रम करने को तैय्यार रहना, इन सब तपस्याओं के लिये एक मनो निग्रह की आवश्यकता हुआ करती है। और इस प्रकार का मनो निग्रह जिस पुरुष ने संसार में दिखाया, वह धन्य है।" वास्तव में हम भी "केसरी" के शब्दों में यही कहेंगे कि मिस्टर गोखले में यही गुण था, वे निस्वार्थ भाव से देश सेवा में जुटे हुए थे जो लोग यह समझते हैं कि युवावस्था में हम नौकरी चाकरी करलें वृद्ध होने पर पेन्शन लेकर देश की सेवा करेंगे, वे भूलते हैं भला कहीं तब देश सेवा हो सकती है, जब सारे अंग शिथिल पड़ गये हैं विवेक और विचार शक्ति का ह्रास हो गया है मस्तिष्क की सब शक्तियां निकम्मी पड़गई

हैं। युवावस्था में जो स्वाभाविक उत्साह होता है वह क्षीण हो गया है। ऐसे लोग जो देश सेवा करना चाहते हैं वे भूलते हैं। हमने ऐसे कितने ही व्यक्तियों को देखा है कि जब वे गुलामी की बेड़ी काट कर किसी देशी संस्था में घुसते हैं जब उस संस्था के पवित्र उद्देश्य में संस्था के सुयोग कर्मचारियों के कर्त्तव्य पथ में कुछ ऐसी अड़चनें उपस्थित कर देते हैं जिससे उस संस्था को लाभ होने के बदले उलटी हानि होती है। यदि गोखले महोदय यह सोचते कि युवावस्था में धन उपार्जन करलें वृद्धावस्था में देश का कुछ कार्य करेंगे तो कदापि उनको इतनी सफलता प्राप्त नहीं होती। मनुष्य का हृदय और मस्तिष्क सदैव उसकी परिस्थिति के अनुसार होता है एक क्लर्क को चाहे जितना अधिक वेतन क्यों न मिलता हो, पर उसका हृदय उच्च नहीं होता, वह सदैव यही सोचा करता है कि हमारा स्वामी मुझसे नाराज़ न हो जाय मुझे कहीं से रिश्वत मिले मेरा इतना वेतन होजाय यही धुनि उसे सवार रहती है। पर एक पत्र सम्पादक का हृदय भिन्न ही होता है, वह सोचता है कि देश की परिस्थिति के सुधारने के लिये किन किन प्रयत्नों की आवश्यकता है अमुक स्थान में अत्याचार हुआ है, उसको कैसे प्रतीकार किया जाय ?

जिस हृदय में ऐसे पवित्र भाव हों वही स्वदेश सेवा का व्रत गृहण कर सकता है। विड़ाल वृति करने वालों का न तो हृदय स्वदेशी हो सकता है न वे देश सेवकों का महत्व समझ सकते हैं। गोखले महोदय की जीवनी से हमको यह शिक्षा प्राप्त होती है कि देश सेवा के लिये पवित्र विचार और पवित्र हृदय की आवश्यकता है। जिनके जीवन का यह व्रत है कि

खाओ, पिओ और चैन उड़ाओ वे कदापि देशसेवा के पवित्र भाव का अवलम्बन नहीं कर सकते हैं । राजा मानसिंह और महाराणा प्रतापसिंह दोनों ही राजपूत थे दोनों ही वीर थे दोनों ही के जीवन का अधिकांश भाग बड़े बड़े भयङ्कर युद्धों में बीता था । पर इतिहास के पाठकों से यह अविदित नहीं है कि दोनों के हृदय में कितना अन्तर था जब महाराणा प्रतापसिंह ने अपनी जन्मभूमि के उद्धार के लिये अनेक कष्टों को फूलों के समान धारण किया था तब राजा मानसिंह ने मुग़ल सम्राट अकबर की शक्ति का विस्तार करना ही अपना कर्त्तव्य समझा था यह अन्तर परिस्थित के अनुसार अपने हृदय और मस्तिष्क बनाने का था । हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि संस्थाओं में जिस हृदय के मनुष्य पहुंचते हैं, उस हृदय के अनुसार ही अच्छी से अच्छी संस्थाओं की दशा हो जाती है । यावज्जीवन " जी हुजूर" कहनेवाले संस्थाओं में पहुंच कर उनके प्रतिष्ठित कर्मचारियों से, ऐसे कर्मचारियों से जिन्हों ने अपनी समस्त हानि लाभ का परित्याग करके अपने से सम्बन्ध रखनेवाली संस्थायों की सेवा का उच्च आदर्श अपने सामने रखा है उनसे विड़ाल वृत्ति वाले जैसा पहले "जीहुजूर" कहते रहे हैं कहलाना चाहते हैं । यही कारण है कि भारतवर्ष की बहुतसी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं में मतभेद हो जाता है, क्या मि० गोखले की जीवनी से "जीहुजूर" कहलानेवाले कुछ बोध प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।

मिस्टर गोखले सच्चे साधु और सन्यासी थे अवश्य ही वे आज कल के साधु और सन्यासियों की भांति भगवे वस्त्र नहीं पहनते थे । हाथ में कमंडल नहीं रखते थे तम्बू नहीं

बांधते थे, पर सन्यासका जो लक्षण त्याग है वह उन्होंने सहर्ष देश सेवा के लिये अवलम्बन किया था और यावज्जीवन अपने आदर्श से टले नहीं। सुनते हैं, एक वार एकबुढ़िया ने उनसे पूछा थाः-आप इतने बड़े आदमी होकर ७०) ७५) रुपया मसिक से अपना कैसे खर्च चलाते हैं इसपर मिस्टर गोखलेने बुढ़िया से कहाः—"मुझे आश्चर्य है, कि आप ऐसा प्रश्न करतीं हैं। देश में ऐसे कितने ही पुरुष हैं, जिनको दिन में दो वार पूरा भोजन भी नहीं मिलता है मैं तो समझता हूं कि मेरा यह बहुत ज्यादा खर्च है"*। यह बुढ़िया यह सुन कर लज्जित और चुप हो गई। क्या यह सच्चे साधु और सन्यासियों के लक्षण नहीं हैं ?

महात्मा गोखले के समस्त परिवार के ऐसे ही विचार हैं। कलकत्ते के प्रसिद्ध अखबार "अमृत बज़ार-पत्रिका" ने गोखले की मृत्यु के पश्चात् यह छाप दिया था कि वे अपने परिवार को अच्छी आर्थिक स्थिति में नहीं छोड़ गये हैं, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इस पर चारों ओर से लोग उनकी लड़कियों की धन से सहायता करने को तैयार हुए। परन्तु लड़कियों ने किसी से आर्थिक सहायता लेना स्वीकार न किया और कहाः—"हमारे पिता, हमको ऐसी स्थिति में नहीं छोड़ गये हैं, जो हम किसी से सहायता

*भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रने ऐसा ही प्रश्न, पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की माता से किया था कि माजी। विद्यासागर की माता के हाथ बिना गहने के कुछ शोभा नहीं देते, इस पर विद्यासागर की माता ने कहाः—"बेटा! विद्यासागर की मांके हाथ गहने से शोभा नहीं पाते, परन्तु भूखों को दान देने से इन हाथों की शोभा है"।

ग्रहण करें। उन्होंने जो अङ्कगणित की पुस्तक लिखी है उससे हमको १२०) एक सौ बीस रुपये मासिक आमदनी है, जो हमारे खर्च के लिये यथेष्ट है।" क्या गोखले महोदय की पुत्रियों का यह दृष्टान्त नहीं बतलाता है कि उन्होंने अपने समस्त परिवार को त्याग की शिक्षा दी थी। यदि उनकी पुत्रियां चाहतीं तो वे इस समय कम से कम एक लाख रुपया एकत्रित कर सकती थीं, परन्तु नहीं उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने व्यक्ति गत स्वार्थ के लिये अपनी जाति को कष्ट नहीं देना चाहा है। देश के कार्य्यों के बहाने पब्लिक से चन्दा इकट्ठा करके चैन उड़ानेवाले क्या गोखले की पुत्रियों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते हैं? हमने एक संस्था के कार्य सञ्चालकों को देखा है; जो अपने कार्य के लिये तो थर्ड या इन्टर क्लास में यात्रा किया करते हैं, पर जब उन्हें पबलिक अर्थात् सर्व-साधारण के कार्य के लिये जाना होता है तब वे सेकण्ड क्लास में यात्रा करते हैं कभी कभी ये लोग अपने शिष्यों से गुप चुप अपना खर्च चलाने के लिये भेंट लेलिया करते हैं और कहते हैं कि हमारे पहले समय का कर्जा चला आता था वह आया है। हमारे ऐसे नेताओं वा कार्य कर्त्ताओं को गोखले महोदय की निस्सहाय पुत्रियोंका उदाहरण इस विषय में अनुकरण करना चाहिये।

वास्तव में गोखले महोदय ने देश सेवा के लिये जैसे धन पर लात मार दी थी वैसे ही उन्होंने मान प्रतिष्ठा की भी पर-वाह नहीं की थी। पिछले दिनों में समाचार पत्रों में छपा था कि लार्ड हार्डिञ्जने गोखले को के० सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान करने के लिये सम्राट को लिखा था, सम्राट ने गोखले

महोदय को उक्त उपाधि देना स्वीकार भी कर लिया था। बांकीपुर से प्रकाशित होनेवाले एक दैनिक पत्र ने इस पर लिखमारा कि यह गप्प है परन्तु यह गप्प नहीं पीछे ज्ञात हुआ कि यह बात सच थी। परन्तु मि० गोखले ने उसको स्वीकार नहीं किया क्योंकि बड़े लाट लार्ड हर्डिञ्ज ने उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए इसको अपनी वक्तृता में जिक्र किया है।

ऐसी कितनी ही बातें हैं कहां तक कहें ? गोखले इस संसारमें नहीं हैं पर वे अपनी ऐसी कितनी ही बातें छोड़ गये हैं जिनसे हम पग पग पर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं । कहां तक गिनावें !—इस लिये हम उन सब बातों को छोड़कर अन्तमें हम श्रीमती सरोजिनी नायडू के एक लेख में से कुछ अंश उद्धृत करते हैं जिससे पाठकों को मिस्टर गोखले की सहृदयता का कुछ पता लगेगा। श्रीमती सरोजनी जी का उक्त लेख—बम्बई के "बम्बई क्रानीकल" नामक अख़बारमें छपा है। इस लेख के आरम्भ में सरोजिनी देवी गोखले महोदय के पत्र से यह वाक्यउद्धृत करती हैं:—मैं चाहता हूं कि मैं आपके पास इतना होता हूं कि स्वयं आकर आप से मिलता ....मुझे विश्वास है कि आप का शोक गीतों द्वारा प्रकट होगा और ये गीत बने रहेंगे । सरोजनी जी कहती हैं कि मिस्टर गोखले के यह सुन्दर शब्द ११ फरवरी को लिखे गये थे। उपर्युक्त शब्दों से प्रत्यक्ष में कोई ऐसी बात प्रतीत नहीं होती कि उनकी मृत्यु इतनी निकट है। यह पत्र मुझको अपने बाप के श्राद्ध के दिन मिला था" कहिये, पाठक ! आपने बहुत से योगियों की कथाएं पढ़ी हैं कि अमुक ने अपनी मृत्यु का समय इतने दिन पहले बतला

दिया था क्या मिस्टर गोखले के इस पत्र से यह ध्वनि नहीं निकलती है कि उनको अपने अन्तिम समय का कुछ आभास सा हो गया था। यदि इन्हें आपने अन्तिम समय का कुछ अनुमान न होता तो वे ऐसे शब्द क्यों लिखते ?

श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इस लेख में एक स्थान पर लिखा है:-"मि० गोखले से मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध एक पत्र द्वारा हुआ और उसकी समाप्त भी पत्र द्वारा ही हुई। सन् १९०६ में कलकत्तेकी समस्त भारतवर्षीय सामाजिक कान्फ़-रेन्स में स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव मुझको सौंपा गया था, मैं ने इस प्रस्ताव को उपस्थित करते समय कुछ ऐसे वाक्य कहे थे जिनका मिस्टर गोखले पर अच्छा प्रभाव हुआ उन्हों ने शीघ्रता में मुझे बड़े प्रेम पूर्ण वाक्य लिखे। यद्यपि मैं अपने को वैसी प्रशंसाके अर्थात् गोखलेने जो कुछ लिखा था। अयोग्य समझती हूं तथापि इसलिये उद्धृत करती हूं कि उससे हमारे भविष्य सम्बन्ध का सूत्रपात्र हुआ था। उन्होंने लिखा था:—'क्या मैं अत्यन्त सम्मान और सच्चे हृदय से आपको बधाई दे सकता हूं। आपकी वक्तृता में अत्यन्त ऊंची श्रेणी बुद्धिमत्ता पूर्ण बिचार की अपेक्षा अधिक विशेषता थी।...... ...... क्षण मात्र को हम सबने यही समझा था कि हम सब स्वर्ग लोक में हैं"। महात्मा गोखले के इन शब्दों से ज्ञात होता है कि वे कार्य करने वाले को किस भांति उत्साहित किया करते थे। उनके इन सब गुणों के लिये आज सारा देश रोरहा है। आओ ! पाठक !! आओ !!! हम महात्मा गोखले की जीवनी से सब शिक्षाएं ग्रहण करके-अपना आदर्श जीवन बनावें उक्त महात्मा के उद्देश्यों का प्रचार करके उनकी

आत्मा को शान्ति प्रदान करें। बस अन्त में यही प्रार्थना है कि गोखले महोदय जैसे क्रियाशील महात्मा का इस देश में पुनः जन्म हो, उनकी मृत्यु से इस देश में क्रियाशील पुरुष का और सच्चे नेता का, जो आसन खाली हुआ है,वह पूर्ण हो गोखलेकी कमी किसी तरह से दूर हो। यही हमारी हार्दिक इच्छा है।

इति



ओङ्कार आदर्श-चरितमाला

सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि ओंकार प्रेस प्रयाग ने संसार के आदर्श पुरुषों के जीवन चरित निकालने आरम्भ कर दिये हैं। प्रत्येक जीवन चरित का मूल्य केवल ।) आना है। प्रत्येक जीवन चरित में लगभग १०० पृष्ठ होते हैं और चरित नायक का एक सुन्दर चित्र भी दिया जाता है। प्रत्येक मास में लगभग दो जीवन चरित निकाले जाते हैं। इस प्रकार ४०० जीवन चरित निकाले जायगे। यदि आप अपना तथा अपने बालक तथा बालिकाओं की उन्नति चाहते हैं तो आप पढ़िये और अपने बच्चों को पढ़ाइये। जो लोग अपना नाम ग्राहकश्रेणी में पहले लिखा लेंगे और रुपया भेज देंगे उन के पास १२ जीवन चरित घर बैठे पहुंच जायंगे। प्रत्येक जीवन चरित छपते ही सेवा में भेजा जाया करेगा। डांक महसूल न देना पड़ेगा। जो लोग रुपया पेशगी न भेजकर ग्राहक श्रेणी में नाम लिखाना चाहते हैं उनको वी० पी० और डांक महसूल सहित प्रत्येक जीवनी ।=) में भेजी जावेगी।

छपे हुए जीवन चरित

१—स्वामी विवेकानन्द
२—स्वामी दयानन्द
३—महात्मा गोखले
४—समर्थ गुरु रामदास
५—स्वामी रामतीर्थ
६—राणा प्रतापसिंह
७—गुरु गोविन्द सिंह
८—आत्मवीर सुकरात
९—नेपोलियन बोनापार्ट
१०—धर्मवीर पं० लेखरामजी

निम्न लिखित छप रहे हैं

१—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
२—छत्रपति शिवाजी
३—लोकमान्य दादा भाई नौरोजी
४—स्वामी शंकराचार्य
५—महात्मा गौतम बुद्ध
६—महादेव गोविन्द रानाडे
७—गुरु नानक
८—भीष्म पितामह
९—दानवीर जे० एन० टाटा
१०—धनकुबेर कारनेगी

मैनेजर ओङ्कार प्रेस, प्रयाग।